पुस्तकों के आरम्भ की कहानियाँ

संकलन
सुषमा गुप्ता

2021

Cover Title : Pustkon Ke Aarambh Ki Kahaniyan (Beginnings of Books)
Cover Page picture : Maharshi Ved Vyaas Jee
Publoshed Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read more such stories : www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

जून **2021**

Contents

इतिहास सीरीज़

प्रारम्भ में हमने एक सीरीज़ प्रारम्भ की थी "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिसके अन्दर हमने संसार के कई देशों की लोक कथाऐं और दंत कथाऐं प्रकाशित की थीं। ऐसा करते समय देखा गया कि एक तरह की कहानी कई देशों में कही जा रही है तो एक और सीरीज़ बनायी गयी "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कहानियाँ शामिल की गयी थीं जिनकी तरह की कहानियाँ और दूसरे देशों में भी उपलब्ध थीं। इस सीरीज़ में **20** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। इसके बाद लोक कथाओं की कुछ क्लासिक पुस्तकों का भी अनुवाद किया गया। इनकी संख्या भी **30** से ऊपर पहुँच गयी।

अब यह एक नयी सीरीज़ प्रारम्भ की जा रही है "इतिहास" नाम की सीरीज़। यह बहुत ही मजेदार सीरीज़ है। इस पुस्तक में दी गयी कहानियाँ लोक कथाऐं नहीं हैं और न ही कहानियाँ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं हैं। इतिहास हमारे उस आधुनिक जीवन शैली की नींव डालता है जिस पर आज हम खड़े हुए हैं और जिस पर हमारा भविष्य बनता है। इतिहास हमारी पृथ्वी का भूगोल बनाता है। इतिहास हमारा समाज बनाता है। इतिहास हमारी भाषा बनाता है। इतिहास हमारी सभ्यता और संस्कृति बनाता है।

पर यह पुस्तकें इतिहास की भी नहीं है क्योंकि इसमें ऐसी एतिहासिक घटनाऐं भी नहीं दी गयीं हैं जो आपको इतिहास की पुस्तकों में मिलें। यहाँ केवल वही विषय सामग्री दी गयी है जो इधर उधर मिलनी कठिन है या नहीं भी मिल सकती है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब पुस्तकें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो इसलिये ये कहानियाँ यहाँ सरल बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। कहीं कहीं विदेशी विषय सामग्री भी है तो उनमें उनके चरित्रों और स्थानों के नाम सही उच्चारण जानने के लिये अंग्रेजी में फुतनोट्स में दिये गये हैं। इसके अलावा भी बहुत सारे शब्द भारतीयों के लिये नये होंगे वे भी चित्रों द्वारा समझाये गये हैं।

ये सब पुस्तकें "इतिहास सीरीज़" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में आप सबके ज्ञान के घेरे को बढ़ायेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
जून **2021**

आरम्भ की कहानियाँ

हमने “इतिहास सीरीज़” नाम की एक सीरीज़ आरम्भ की है जिसमें हम भिन्न भिन्न प्रकार के इतिहासों का वर्णन दे रहे हैं। यह ऐतिहासिक सूचना तुमको कहीं किसी एक इतिहास की पुस्तक में नहीं मिलेगी। इन्हें ढूँढ ढूँढ कर एकत्रित करके एक स्थान पर रखा गया है। इसकी पहली पुस्तक[1] में हमने देश विदेश के राजा और कुछ और बड़े लोगों के जीवन की ऐसी व्यक्तिगत घटनाओं के बारे में लिखा था जो आम लोगों को मालूम नहीं हैं। इसकी दूसरी पुस्तक[2] में हमने कुछ वैज्ञानिकों के व्यक्तिगत जीवन की वैसी ही घटनाओं के बारे में लिखा था जो आम लोगों को मालूम नहीं हैं।

और अब यह है इस कड़ी की तीसरी पुस्तक। इस पुस्तक में हम कुछ बहुत लोकप्रिय पुस्तकों के आरम्भ का इतिहास दे रहे है कि वे कैसे आरम्भ हुईं। यहाँ हम उनके लिखने की बात नहीं करेंगे कि “वे क्यों लिखी गयीं” क्योंकि लिखना तो एक ऐसी प्रकिया है जिसके द्वारा उसे सुरक्षित किया जाता है। यहाँ केवल उनकी रचना की बात हो रही है।

पिछली पुस्तकों की तरह से क्योंकि यह पुस्तक भी इतिहास की नहीं है इसलिये इसमें भी ऐतिहासिक घटनाऐं नहीं दी गयीं हैं बल्कि कुछ ऐसी घटनाऐं दी गयी हैं जिन्होंने इन बड़ी बड़ी पुस्तकों को जन्म दिया या फिर उन घटनाओं को जन्म दिया जिन की वजह से वे रची गयीं। और जिन घटनाओं को शायद बहुत सारे लोग नहीं जानते।

इस प्रकार इस पुस्तक में दी गयी कहानियाँ न तो लोक कथाऐं हीं हैं और न ही संसार के देशों में कही गयी कहानियाँ हैं बल्कि उनके आरम्भ होने का इतिहास है। ये कुछ ऐसी ऐतिहासिक कथाऐं हैं जो बच्चों के ज्ञान की सीमा को बढ़ायेंगी। इसमें केवल एक पुस्तक गीता को छोड़ कर शेष सामान्यतया सब पुस्तकों में कहानियों का जाल बिछा हुआ है। इन सब पुस्तकों में केवल एक गीता ही कहानियों की पुस्तक नहीं हैं पर उसके लिखने की वजह जरूर है। इसीलिये उसको यहाँ शामिल कर लिया गया है और उसकी वजह ही यहाँ बतायी गयी है कि वह क्यों कही गयी या क्यों लिखी गयी।

हाँ रामायण, महाभारत और भागवत पुराण में सब धार्मिक और भारत के बहुत पुराने इतिहास की कहानियाँ हैं। कहते हैं कि जो कहानी महाभारत में नहीं है वह कहानी कहीं नहीं है।

हमें पूरा विश्वास है कि ऐतिहासिक कहानियों की यह पुस्तक तुम सबका मनोरंजन तो करेगी है साथ में नयी जानकारी के साथ साथ तुम सबके ज्ञान को भी बढ़ायेगी। यह तुम्हें उन पुस्तकों का इतिहास बतायेगी जिनको तुम लोग अक्सर पढ़ते तो हो पर यह नहीं जानते कि वे क्यों लिखी गयीं।

इन्हें पढ़ो और अपना ज्ञान बढ़ाने के साथ साथ इनसे अपना मनोरंजन भी करो।

---

[1] “Itihas-1-People” was about the personal less-known incidents of some kings and great people. They are of over 22 people.

[2] “Itihas-2-Scientists” was about the personal less known incidents of some scientists.

1 रामायण[3]

कुछ ऐतिहासिक कहानियों की पुस्तक की इस तीसरी पुस्तक की शुरूआत हम भारत के आदि कवि द्वारा लिखे गये आदि काव्य से करते हैं। आदि कवि माने पहले कवि और आदि काव्य माने पहली कविता या पद्य।

भारत के आदि कवि हैं महर्षि वाल्मीकि जी और आदि काव्य है उनका लिखा हुआ श्री वाल्मीकि रामायण। हालॉकि रामायण तो बहुत सारी हैं और कई भाषाओं में हैं पर इनकी अपनी रामायण भारत की मूल भाषा संस्कृत में है।

बच्चो तुमने श्रीराम का नाम तो सुना ही होगा। बहुत सारे हिन्दू लोग राम नाम का जाप करते हैं। कुछ लोग जब एक दूसरे से मिलते हैं तो "जय श्रीराम" या "जय राम जी की" बोलते हैं। उन्हीं श्रीराम की कहानी इस रामायण में लिखी है।

क्या तुमने रामायण सुनी है या पढ़ी है? अगर पढ़ी है तो बहुत अच्छा है और अगर नहीं पढ़ी है तो जरूर पढ़ना। यह एक बहुत ही अच्छी किताब है और उत्तर प्रदेश के घर घर में तो अक्सर ही पढ़ी जाती है। कुछ लोग इसका रोज पाठ भी करते हैं।

यह हमको इस दुनियॉ में रहना सिखाती है। हमको हमारे जीवन के मूल्य बनाना सिखाती है और परिवार और समाज में मित्रता और

[3] Raam Charit Maanas. Written by Tulsidas Jee

सामंजस्य का भाव बना कर रखना सिखाती है। एक दूसरे के लिये हमारे क्या कर्तव्य हैं यह सिखाती है।

तुम लोग सोच रहे होगे ऐसी उपयोगी धार्मिक किताब की शुरूआत की भी कोई कहानी हो सकती है क्या? पर हॉ है इसकी शुरूआत की भी कहानी है और एक नहीं कई कहानियॉ हैं।

रामायण सबसे पहले महर्षि वाल्मीकि जी ने संस्कृत में लिखी थी। इससे यह साबित होता है कि यह ग्रन्थ संस्कृत की श्लोक शैली में ही सबसे पहले लिखा गया था।

इसके बाद श्रीराम के बारे में कई रामायण भारत की ही नहीं बल्कि दूसरे देशों की कई भाषाओं में भी लिखी गयीं। उत्तर प्रदेश में श्री तुलसीदास जी की अवधी भाषा में लिखी हुई श्री रामचरित मानस बहुत लोकप्रिय है और यही घर घर में पढ़ी और सुनी जाती है। रामायण क्यों हुई इसकी कहानी हमने तुलसीदास जी की लिखी हुई इसी श्री रामचरित मानस से ली है।

रामायण में दो मुख्य चरित्र हैं एक तो भगवान श्रीराम का और दूसरा राक्षसराज रावण का। दोनों का जन्म ही क्यों हुआ यही रामायण की शुरूआत की वजह है।

इस बारे में दोनों की अलग अलग कहानियॉ हैं। उन दोनों की कहानियॉ तो कई हैं पर हम यहॉ पर तुम्हारे लिये उन दोनों की सबसे ज़्यादा लोकप्रिय एक एक कहानी दे रहे हैं।

रावण और कुम्भकर्ण कौन थे?

रावण और कुम्भकर्ण कौन थे? तुम कहोगे कि वे तो राक्षस थे। तुमने ठीक कहा कि वे राक्षस थे पर वे वाकई कौन थे।

तो इसकी शुरूआत बताने के लिये हम तुम्हें दुनियाँ के जन्म के समय तक ले चलते हैं। भगवान विष्णु की नाभि से ब्रह्मा जी का जन्म हुआ। जन्म लेते ही ब्रह्मा जी ने इधर उधर देखा तो उनको दो अक्षर सुनायी पड़े "त" और "प"। उन्होंने उन दोनों अक्षरों को मिला कर "तप" शब्द बनाया और तप करने में लग गये।

इस तप के फलस्वरूप उनके सबसे पहले चार मानस पुत्र[4] हुए जिनके नाम थे सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन। ये सब सनकादि मुनि के नाम से जाने जाते हैं। इनको पैदा करने के बाद ब्रह्मा जी ने इनसे कहा कि वे संसार में जायें और सन्तानें पैदा करें ताकि उनका संसार बढ़े।

सनकादि मुनि ने कहा कि क्योंकि हम आपके तप से पैदा हुए हैं इसलिये हम केवल तप ही करेंगे और वे बजाय संसार में जाने के तप करने चले गये। अब वे तप करते थे और सब जगह घूमते थे।

उनकी उम्र 12 साल की थी और वे हमेशा 12 साल के बालक ही लगते थे। उनकी सूरत देख कर कोई उनकी उम्र नहीं बता सकता था।

[4] Maanas Putra means "Brain Children" – means born just by imagination

विष्णु जी अपने वैकुंठ लोक में रहते थे। उनके दो द्वारपाल थे जिनका नाम था जय और विजय।

एक बार सनकादि मुनि भगवान विष्णु से मिलने वैकुंठ लोक गये और वहाँ जा कर उनके द्वारपालों से कहा कि उनको भगवान विष्णु से मिलना है।

उनके द्वार पर खड़े दोनों द्वारपालों ने देखा कि **10–12** साल के चार बच्चे वैकुंठ के द्वार पर खड़े हैं और भगवान से मिलने की आज्ञा चाहते हैं। उन्होंने उनको पहचाना नहीं और उनको भगवान से मिलवाने से मना कर दिया।

यह सुन कर सनकादि मुनि को गुस्सा आ गया और उनकी उनसे कुछ कहा सुनी हो गयी। इस कहा सुनी की आवाज भगवान विष्णु के कानों में पड़ी तो वह यह देखने के लिये बाहर आये कि मामला क्या है।

उस समय तक सनकादि मुनि ने उन दोनों को हमेशा के लिये राक्षस बनने का शाप दे दिया था और वे आगे कुछ और कहने ही जा रहे थे कि भगवान को आते देख कर वे रुक गये।

भगवान ने उनसे बड़ी नम्रता से पूछा — "हे मुनि, क्या बात है। आप इतने गुस्सा क्यों हैं। क्या मुझसे कोई अपराध हो गया है?"

तब सनकादि मुनि ने उनको सब हाल बताया और बोले "अब इनको क्या दंड दिया जाये यह आप ही निश्चित करें।" और यह कह कर वे वहाँ से चले गये।

मुनियों के जाते ही दोनों द्वारपाल भगवान विष्णु के चरणों पर गिर पड़े और अपने किये की क्षमा माँगने लगे।

भगवान विष्णु ने उनसे कहा कि मुनियों का वचन झूठा तो नहीं हो सकता इसलिये तुम दोनों को राक्षस योनि में जन्म तो लेना ही पड़ेगा। पर हाँ मैं उसको तुम लोगों के लिये थोड़ा सरल बना सकता हूँ।

पहली बात जैसा कि मुनि ने कहा है कि तुम लोग हमेशा के लिये राक्षस हो जाओ तो तुम हमेशा के लिये हमेशा के लिये राक्षस नहीं बनोगे। इसके लिये मैं तुमको दो विकल्प देता हूँ।

एक तो यह कि तुम सात जन्म तक साधारण राक्षस बनो और फिर सात जन्म राक्षस योनि में बिता कर अपने इस पुराने रूप को प्राप्त करो।

या फिर तुम तीन जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लो और तीन जन्म राक्षस योनि में जन्म लेने पर तीनों जन्मों में मेरे हाथ से मारे जाने पर इस शाप से मुक्ति पा जाओ। पर इन तीनों जन्मों में तुम लोगों को बहुत ही भयानक राक्षस बनना पड़ेगा।"

दोनों द्वारपाल तुरन्त बोले — "भगवन हम सात जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लेने की बजाय तीन जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लेना और फिर आपके हाथ से मरना अधिक पसन्द करेंगे।"

वे आगे बोले — "पर भगवन हमारी एक प्रार्थना और है।"

"वह क्या।"

"राक्षस योनि तो बहुत खराब योनि है। उसमें जन्म ले कर तो हम अपना सारा विवेक और ज्ञान भूल जायेंगे। हम अपने उन जन्मों में भी उस ज्ञान को याद रखना चाहेंगे।"

भगवान विष्णु ने कहा "ठीक है।"

इसके बाद वे दोनों द्वारपाल तीन जन्मों तक राक्षस योनि में पैदा हुए। पहली बार वे दो भाइयों हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप के रूप में जन्मे जिनमें वे दोनों इतने भयानक राक्षस बने कि भगवान को उनको मारने के लिये दो अवतार लेने पड़े। वे दोनों भगवान के वाराह अवतार और नृसिंह अवतार द्वारा मारे गये।

दूसरी बार वे दो भाइयों रावण और कुम्भकर्ण के रूप में पैदा हुए और भगवान के श्रीराम अवतार के द्वारा मारे गये। इनका यह जन्म ही रामायण का आधार है।

तीसरी बार वे शिशुपाल और दंतवक्र[5] के रूप में पैदा हुए और भगवान के श्रीकृष्ण अवतार के द्वारा मारे गये।

[5] Shishupaal was the son of Damghosh (King of Chedi lineage) and Shrutshravaa (Vasudev's sister). Krishna killed him by His Chakra in the Raajsooya Yagya of Yudhishthir. Dantavakra was born in Chedi lineage and was the King of Karoosh country. He was also killed by Krishn in a duel Gadaa fight. He was the son of Vriddhasharmaa and Shrutadevaa (Vasudev's sister).

हर बार इनके राक्षस होने की भयंकरता इनके पहले जन्म से कम होती गयी। इसका सबूत यह है कि इनके पहले जन्म में इनको मारने के लिये भगवान विष्णु को दो अलग अलग अवतार लेने पड़े।

इनके दूसरे जन्म में भगवान विष्णु ने केवल श्रीराम का अवतार ले कर ही इनको मार दिया था। पर इनके तीसरे जन्म में ये इतने महत्वपूर्ण नहीं थे कि भगवान विष्णु को केवल इन्हीं के लिये अवतार लेना पड़े।

उन्होंने तो किसी और काम के लिये अवतार लिया था बस साथ में इन दोनों को भी मार दिया था। बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं कि वे राक्षस थे भी या नहीं और अगर राक्षस थे भी तो कौन थे। तो यह था रावण और कुम्भकरण के जन्म का कारण।

श्रीराम जन्म का कारण

श्रीराम जन्म का एक कारण तो यही था कि भगवान विष्णु को अपने दोनों द्वारपालों को राक्षस योनि से मुक्ति दिलानी थी पर इनके जन्म का एक कारण और भी है।

यह कहानी हमें यह भी बताती ही कि श्रीराम का जीवन ऐसा क्यों बीता जैसा कि उन्होंने बिताया। वह तो एक राजकुमार थे और वह राजकुमार बने रह कर भी रावण और कुम्भकर्ण को मार सकते

थे फिर उनको ऐसा जीवन क्यों बिताना पड़ा जैसा उन्होंने बिताया – सन्यासी की तरह, वन में चौदह साल तक।

यह एक बहुत ही मजेदार कहानी है तो लो पढ़ो यह मजेदार कहानी यहाँ...

जब ब्रह्मा जी के पहले चारों पुत्र यानी सनकादि मुनि तप करने चले गये तो उन्होंने दस मानस पुत्र और पैदा किये – मरीचि, भृगु, अंगिरा, पुलह, पुलस्त्य, वशिष्ठ, अत्रि, क्रतु, दक्ष और नारद।

नारद जी उनके इन दसों पुत्रों में सबसे छोटे थे। जब ब्रह्मा जी ने इन सबसे इस संसार को आगे चलाने के लिये सन्तान पैदा करने लिये कहा तो इनके ये सब पुत्र इस संसार को बढ़ाने में लग गये।

पर इनमें से ब्रह्मा जी के दसवें पुत्र नारद जी न तो तप करने गये और न ही उन्होंने खुद कोई सन्तान पैदा की बल्कि दूसरे लोगों के बच्चों को भी उनके इस रास्ते से भटका कर तप करने के लिये भेज दिया।

इससे गुस्सा हो कर उन बच्चों के पिता ने इनको शाप दे दिया कि ये कभी अपना घर नहीं बसा पायेंगे और घर न होने की वजह से ये कहीं एक जगह टिक कर भी नहीं बैठ पायेंगे। सो न तो उनका घर ही बसा और न ही वह एक किसी जगह टिक कर ही बैठ पाते हैं। बस वह तो सब लोकों में घूमते ही रहते हैं।

एक बार नारद जी इधर उधर घूम रहे थे कि एक सुन्दर सी जगह देख कर उनको भगवान का ध्यान करने का मन किया। बस

वह वहीं समाधि लगा कर बैठ गये और भगवान के ध्यान में मग्न हो गये।

देवताओं के राजा इन्द्र ने देखा कि नारद जी तो ध्यान में मग्न हैं तो उनको लगा कि वह शायद वह उनका इन्द्र लोक लेने के लिये यह तपस्या कर रहे हैं। उन्होंने तुरन्त ही काम देव को उनकी तपस्या भंग करने के लिये भेजा पर वह उनकी तपस्या भंग न कर सका और वापस लौट आया।

जब नारद जी अपनी तपस्या से जागे तो उनको यह देख कर बहुत खुशी हुई कि काम देव उनका कुछ नहीं बिगाड़ सका। उनको यह देख कर बहुत घमंड हो गया कि मैंने तो काम देव को जीत लिया।

तपस्या खत्म करके पहले तो नारद जी इन्द्र के दरबार में पहुँचे और वहाँ जा कर अपनी शान बघारी। उनकी बात सुन कर वहाँ बैठे सारे देवताओं ने उनकी बहुत बड़ाई की।

वहाँ से फिर वह कैलाश पर्वत चले गये और वहाँ जा कर शिव जी को यह घटना बतायी। शिव जी यह सुन कर मुस्कुराये और उनसे कहा "यह घटना तुमने मुझे बतायी तो बतायी कोई बात नहीं पर किसी और को मत बताना और खास करके विष्णु को।"

"ठीक है" कह कर नारद जी वहाँ से चल कर ब्रह्मा जी के दरबार में आये और शिव जी की चेतावनी के बाद भी उन्होंने यह

घटना उनकी सभा में बतायी। ब्रह्मा जी ने भी उनको वही सलाह दी जो शिव जी ने उनको दी थी।

पर नारद जी का घमंड इतना ज़्यादा था कि शिव जी और ब्रह्मा जी के मना करने पर भी वह उस घटना को बताने के लिये अब विष्णु जी के पास चल दिये।

विष्णु जी ने भी उनकी यह घटना सुन कर उनकी बहुत तारीफ की पर सोचा कि मेरा भक्त तो घमंड में फॅस गया है। यह ठीक नहीं है। मुझको अपने भक्त की सहायता करनी चाहिये।

सो घटना सुनाने के बाद जब नारद जी विष्णु जी के पास से चले गये तो उन्होंने नारद जी का घमंड दूर करने के लिये अपनी माया फैलायी।

जिस रास्ते से नारद जी अपने घमंड में फूले चले जा रहे थे उसी रास्ते पर उनको एक बहुत बड़ा शहर दिखायी दिया। उसके देख कर उन्होंने सोचा "यह शहर तो यहॉ मैंने पहले कभी देखा नहीं यह शहर कहॉ से आ गया। चलो चल कर देखता हॅू।" और वह उस शहर में अन्दर चले गये।

अन्दर जा कर उन्होंने देखा तो देखा कि वह तो सारा शहर बहुत सुन्दर सुन्दर लोगों से भरा हुआ है और वहॉ तो बहुत चहल पहल हो रही है। सारे बाजारों में लोग बड़े सज धज कर घूम रहे

हैं। पूछने पर पता चला कि इस शहर के राजा की बेटी का स्वयंवर[6] है।

वह वहॉ के राजा के पास गये। उस शहर के राजा का नाम था शीलनिधि। जब वह राजा के पास गये तो राजा ने उनको देवर्षि नारद जाना और उनका बड़े प्रेम और आदर से स्वागत किया।

बड़े ऋषि जान कर राजा ने अपनी बेटी को बुलाया और उसको ऋषि के चरणों में डाल कर कहा — "देवर्षि यह मेरी बेटी है। आप इसके भविष्य के बारे में मुझे कुछ बताने की कृपा करें कि इसको कैसा पति मिलेगा।"

नारद जी ने उस कन्या को देखा तो वह तो उसको देख कर अपनी सुधबुध खो बैठे। जब वे थोड़े होश में आये तब उन्होंने उसका हाथ देखा। उसका हाथ देख कर तो वे और भी ज़्यादा परेशान हो गये।

उसके हाथ में तो एक ऐसे पति की लकीर पड़ी थी जो तीनों लोकों का राजा था। पर क्योंकि नारद जी अब खुद उससे शादी करना चाहते थे सो वह सच को छिपा कर राजा से बोले — "हे राजन। तुम्हारी कन्या बहुत भाग्यवान है। इसको बहुत अच्छा पति मिलेगा। तुम बिल्कुल चिन्ता न करो।"

---

[6] Swayamvar – Swayam means "Self" and Var means "Husband". Thus Swayamvar means "to choose a husband herself". In olden days kings used to organize Swayamvar for their daughters to marry them to their desired husbands. On a special day all invited and uninvited kings and princes came there and the princess was introduced to them formally carrying a garland. The princess put the garland in anyone's neck to whom she wanted to be her husband.

और यह कह कर वह उस कन्या का ध्यान करते हुए वहाँ से चल दिये। रास्ते में वह यही सोचते चले आ रहे थे कि वह ऐसा क्या करें ताकि उस राजकुमारी की शादी उनसे हो जाये।

तभी उनको ध्यान आया कि विष्णु जी ही तो उनके सबसे बड़े मित्र हैं इस समय उनको अपनी सहायता के लिये उन्हीं के पास जाना चाहिये। वही एक हैं जो इस समय उनके काम आ सकते हैं सो वह फिर से विष्णु जी के पास चल दिये।

वहाँ पहुँच कर वह उनसे बोले — "प्रभु आज मैं आपसे कुछ माँगने आया हूँ।"

विष्णु जी नारद जी पर अपनी माया का प्रभाव देख कर बहुत प्रसन्न हुए। वे बोले — "क्या नारद जी। बताइये आप क्या माँगना चाहते हैं?"

नारद जी बोले — "भगवन मुझे आप अपने जैसा रूप दे दीजिये।"

विष्णु जी बोले — "नारद जी यह तो मुझे नहीं मालूम कि आप मेरे जैसे रूप का क्या करेंगे पर जब आपने माँगा है तो बस मैंने आपको दिया।"

नारद जी यह सुन कर बहुत खुश हुए और भगवान से उन जैसा रूप पा कर राजकुमारी के स्वयंवर की तरफ चल दिये। इस रूप को पाने के बाद अब नारद जी को पूरा विश्वास था कि राजकुमारी अपनी जयमाला अब उन्हीं के गले में डालेगी।

राजकुमारी के स्वयंवर में बहुत सारे राजा और राजकुमार आये हुए थे। नारद जी भी वहॉ एक ऐसी जगह जा कर बैठ गये जहॉ से जब राजकुमारी अपनी जयमाला ले कर आती तो वह जल्दी ही उनको देख लेती।

कुछ देर में विष्णु जी भी लक्ष्मी जी के साथ वहॉ आये और अपने अपने आसन पर आ कर बैठ गये।

और फिर कुछ देर में राजकुमारी जयमाला लिये हुए स्वयंवर सभा में आयी। वह अपनी जयमाला लिये हुए राजाओं और राजकुमारों को देखती हुई चली आ रही थी।

नारद जी बहुत बेचैन थे। वह सोच रहे थे कि विष्णु जी तो बहुत सुन्दर हैं और उन्होंने मुझे अपना रूप दिया है तो मैं भी उन्हीं के जैसा सुन्दर हूँ तो अब तो राजकुमारी को मेरे गले में माला डालनी ही चाहिये।

यह सोच सोच कर नारद जी अपना मुँह उठा उठा कर राजकुमारी की तरफ देखे जा रहे थे पर राजकुमारी तो उनकी तरफ देख ही नहीं रही थी।

चलते चलते वह उधर आयी भी पर नारद जी की तरफ बिना देखे ही आगे बढ़ गयी। आगे जा कर उसने विष्णु जी के गले में अपनी जयमाला डाल दी तो यह देख कर नारद जी को बड़ी निराशा हुई।

विष्णु जी की और उस राजकुमारी की शादी हो गयी और विष्णु जी उसको ले कर वहाँ से चल दिये। नारद जी बहुत गुस्सा थे।

उस स्वयंवर सभा में शिव जी के दो गण[7] भी बैठे हुए थे। वे नारद जी को तभी से बड़ी बारीकी से देख रहे थे जब से वे वहाँ आये थे। जब विष्णु जी राजकुमारी को साथ ले कर वहाँ से चले गये तो उन्होंने देखा कि नारद जी तो बहुत गुस्सा हैं।

उनको दाल में कुछ काला लगा तो वे उनसे हँस कर बोले — “ज़रा अपनी शक्ल तो जा कर देखिये ऋषिवर। क्या आप इस बन्दर जैसी शक्ल से राजकुमारी से शादी करने आये थे?”

यह कहते ही उनको लगा कि उन्होंने नारद जी से यह कह कर बहुत बड़ी गलती कर दी। ऐसा न हो कि नारद जी उनको शाप दे दें सो वे जल्दी से वहाँ से भाग गये।

नारद जी ने उनको पहचान लिया कि वे शिव जी के गण थे। उस समय में शीशा तो होता नहीं था जो वह शीशे में अपना चेहरा देख लेते सो उन्होंने पानी में अपना चेहरा देखने का निश्चय किया।

जो कुछ उन गणों ने उनसे कहा उसकी सच्चाई को परखने के लिये वह एक तालाब के पास पहुँचे और उसके पानी में अपने चेहरे की परछाईं देखी। तो उनका चेहरा तो सचमुच में ही बन्दर का था।

[7] Shiv’s Gan – Shiv’s servants are known as “Gan”. He has many Gan.

यह देख कर उन्होंने शिव जी के दोनों गणों को शाप दिया कि "तुमने एक ब्राह्मण की हॅसी उड़ायी है इसलिये तुम पृथ्वी पर जा कर राक्षस हो जाओ।" ये ही दोनों गण धरती पर रावण और कुम्भकर्ण के रूप में जन्मे।

इसके बाद नारद जी ने अपने दॉत किटकिटाये और फिर विष्णु जी के पास वैकुंठ लोक चल दिये। जब वह वैकुंठ लोक जा रहे थे तो रास्ते में ही उनको विष्णु जी मिल गये। उनके साथ लक्ष्मी जी और वह राजकुमारी जिसे वह अभी अभी शादी करके लाये थे दोनों थीं।

बस नारद जी ने आव देखा न ताव और बरस पड़े विष्णु जी पर। नारद जी बोले — "तुमने मेरा चेहरा बन्दर का क्यों बनाया। क्योंकि तुम्हारे सिर पर बड़ा कोई नहीं है इसलिये तुम जो चाहते हो वही करते फिरते हो।

समुद्र मन्थन के समय तुमने जहर शिव जी को पिला दिया और लक्ष्मी जी खुद ले लीं। पर आज तुम्हारा पाला किसी ठीक आदमी से पड़ा है। मैं तुम्हें बताता हूॅ कि किसी के साथ ऐसा बरताव करने से क्या होता है।"

काफी बुरा भला कहने के बाद भी जब नारद जी को सन्तोष नहीं हुआ तो उन्होंने विष्णु जी को तीन शाप दिये — "मैं तुमको शाप देता हूॅ कि तुम धरती पर मनुष्य के रूप में जन्म लो।

दूसरे तुम भी अपनी पत्नी के विरह में ऐसे ही तड़पो जैसे मैं राजकुमारी के बिना तड़प रहा हूँ। तीसरे क्योंकि तुमने मुझे बन्दर का रूप दिया है इसलिये तुम्हारी पत्नी को ढूँढने में बन्दर ही तुम्हारी सहायता करेंगे।"

विष्णु जी ने सिर झुका कर नारद जी के तीनों शाप स्वीकार किये और फिर अपनी माया समेट ली। जैसे ही उन्होंने अपनी माया समेटी तो न तो वहाँ लक्ष्मी जी थीं न वहाँ वह राजकुमारी थी। बस विष्णु जी और नारद जी ही खड़े थे।

नारद जी अपने पुराने रूप में आ गये थे और उनके दिमाग पर पड़ा परदा भी हट गया था। वह विष्णु जी के पैरों पर गिर पड़े और उनसे क्षमा माँगने लगे —

"भगवन मुझे क्षमा करें। यह मैंने क्या किया कि मैंने आपको इतने सारे शाप दे दिये। यह मेरी कितनी बड़ी भूल थी। मुझसे कितना बड़ा पाप हो गया। मेरे इस पाप का पायश्चित बताइये प्रभु।"

विष्णु जी बोले — "नारद तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। यह सब तुमसे मैंने ही कराया है तुम्हारी इसमें कोई गलती नहीं है। तुम आनन्द करो।"

नारद जी बोले — "भगवन यह गलती तो मेरी ही है। मुझे इसका प्रायश्चित बतायें उसके बिना मेरे मन को शान्ति नहीं मिलेगी।"

विष्णु जी बोले — "अगर ऐसा है और तुम प्रायश्चित करना ही चाहते हो तो मेरे परम भक्त शिव के नाम का जप करो।"

यह कह कर विष्णु जी वैकुंठ लोक चले गये और नारद जी शिव जी के नाम का जप करने चले गये।

सो नारद जी के इन्हीं तीन शापों के कारण भगवान विष्णु को मनुष्य योनि में धरती पर जन्म लेना पड़ा। एक साल अपनी पत्नी सीता जी के विरह में परेशान होना पड़ा और फिर उनको ढूँढने में बन्दरों ने उनकी सहायता की।

इसी लिये उनको अपना जीवन उस तरह से जीना पड़ा जैसे कि उन्होंने जिया।

इस तरह यह रामायण इसी की कहानी है कि रावण और कुम्भकर्ण कौन थे। उनको मारने के लिये भगवान को क्यों आना पड़ा। भगवान श्रीराम बन कर आये भी तो उनको अपना जीवन इस तरह से क्यों बिताना पड़ा।

रामायण में भी बीच बीच में बहुत सारी कहानियाँ आती हैं पर इसकी मुख्य कहानी भगवान श्रीराम और राक्षसराज रावण की ही है।

2 महाभारत[8]

भारत का महाभारत एक दूसरा ऐसा महाकाव्य है जो केवल भारत का ही नहीं बल्कि संसार भर का सबसे बड़ा महाकाव्य है। पश्चिमी दुनियाँ में महाकवि होमर के दो महाकाव्य इलियड और ओडिसी[9] को मिला देने के बाद भी यह उससे दस गुना बड़ा महाकाव्य है।

यह भी बहुत पुराना लिखा हुआ है हालाँकि इसकी कोई एक तारीख नहीं है। इसकी शुरूआत की कहानी पढ़ने से पहले इसके बारे में कुछ जान लेना ज़्यादा ठीक रहेगा।

इसको महर्षि वेद व्यास जी ने रचा और गणेश जी ने अपने दाँत से लिखा। इसकी यह कहानी बहुत ही मशहूर और मजेदार है। हालाँकि यह कहानी इस सन्दर्भ में तो नहीं आती पर बहुत मजेदार है इसलिये पढ़ो।

जब व्यास जी इस महाकाव्य को लिखने लगे तो उन्होंने देखा कि उनकी यह रचना तो बहुत बड़ी है और इसे वह खुद अकेले नहीं लिख सकते तो वह ब्रह्मा जी के पास गये और उनको अपनी उलझन बतायी कि उनको कोई लिखने वाला चाहिये जो उनके इस ग्रन्थ को लिख सके।

---

[8] Mahabharat – an epic of the history of an Indian family of five generations lived in Dwaaapar Yug. The longest version of this epic goes up to 100,000 Shlok – about 1.8 million words in total. One Shlok is a two-line verse. It is roughly 10 times longer than Homer's Iliad and Odyssey combined.

[9] In Western world there are two epics – Iliad and Odyssey – both written by the great poet Homer of Greece (supposed to be sold there as a slave). He was blind.

ब्रह्मा जी कुछ सोच कर बोले — "मैं और किसी को तो जानता नहीं हॉ अगर गणेश जी इसे लिखने के लिये तैयार हो जायें तो... । तुम उनसे बात कर लो।"

सो व्यास जी गणेश जी के पास गये और उनसे अपना यह महाकाव्य लिखने की प्रार्थना की। गणेश जी ने कहा कि मैं आपका यह काव्य लिख तो दूँगा पर मेरी एक शर्त है।

व्यास जी ने पूछा "वह क्या?"

इस पर गणेश जी बोले — "एक बार जब मैं शुरू हो गया तो लिखते समय मैं रुकूँगा नहीं। अगर आप बीच में रुक गये तो मैं इसे बीच में छोड़ कर चला जाऊँगा।"

इस पर व्यास जी बोले कि "तो फिर मेरी भी एक शर्त है।"

"वह क्या?"

व्यास जी बोले — "आप बिना सोचे समझे कुछ नहीं लिखेंगे।"

और इन शर्तों पर महाभारत लिखने का काम शुरू हुआ। सरस्वती जी ने उन्हें कलम और न खत्म होने वाली स्याही की दवात दी। भू देवी ने उन्हें कागज दिया।

कहते हैं कि व्यास जी के श्लोक इतने कठिन होते थे कि जितनी देर में गणेश जी उनको समझ कर लिखते थे व्यास जी कई और नये श्लोकों की रचना कर लेते थे।

यह भी कहते हैं कि एक बार बीच में गणेश जी की कलम टूट गयी तो लिखने की जल्दी में उन्होंने अपना एक दाँत तोड़ा और जल्दी में उसी से लिखना शुरू कर दिया था। तभी से गणेश जी एकदंत हो गये थे।

खैर यह तो रही इस महाकाव्य के रचयिता और लेखक के बीच की बात। अब हम शुरू करते हैं इस महाकाव्य की शुरूआत की कहानी कि यह महाभारत हुई ही क्यों जिसे व्यास जी ने रचा और गणेश जी ने लिखा।

महाभारत एक परिवार की पाँच पीढ़ियों की कहानी है। राजा शान्तनु की – उनके दो बेटे चित्रांगद और विचित्रवीर्य की – विचित्रवीर्य के दो बेटे धृतराष्ट्र और पांडु की – धृतराष्ट्र और पांडु के पुत्रों **100** कौरवों और पाँच पांडवों की – और फिर पांडवों के वंशज परीक्षित की।

सो महाभाारात की शुरूआत कैसे हुई?

बहुत पुराने समय में एक राजा थे जिनका नाम था महाभिष।[10] वह बहुत ही प्रतापी और तेजस्वी राजा थे। पहले जो राजा बहुत प्रतापी और तेजस्वी होते थे उनकी पहुँच स्वर्ग तक होती थी और देवता भी उनकी सहायता लिया करते थे। महाभिष ऐसे ही राजाओं में से एक थे।

---

[10] King Mahaabhish

एक बार राजा महाभिष इन्द्र लोक गये और वहॉ देव सभा में बैठे हुए अप्सराओं का नाच देख रहे थे। उसी समय ब्रह्मा जी भी अपनी बेटी गंगा के साथ वहॉ आये।

सब बैठे हुए अप्सराओं के नाच का आनन्द ले रहे थे कि पवन देव ने शरारत से गंगा का ऑचल उड़ा दिया। यह देख कर सब देवताओं ने अपनी अपनी ऑखें झुका लीं पर राजा महाभिष गंगा की ओर एकटक देखते ही रह गये और देखते ही रहे। गंगा भी उनकी तरफ देखती रहीं और देखती ही रह गयीं।

ब्रह्मा जी ने यह देखा तो यह उनको राजा महाभिष और अपनी बेटी गंगा दोनों की ढिठाई लगी। वह बहुत गुस्सा हुए और उन्होंने उन दोनों को शाप दिया कि वे दोनों ही धरती पर मनुष्य रूप में जन्म लें।

अब ब्रह्मा जी का शाप तो टाले नहीं टल सकता था सो दोनों ने धरती पर मनुष्य रूप में जन्म लिया राजा महाभिष ने राजा शान्तनु के रूप में और गंगा ने गंगा के रूप में।

महाभारत होने का कारण यहीं खत्म नहीं हो जाता। कुछ देर इन्द्र सभा में बैठने के बाद सब देवता अपने अपने लोकों को चले गये। ब्रह्मा जी भी अपनी बेटी गंगा को ले कर अपने लोक को चले गये।

रास्ते में गंगा को आठ वसु[11] मिले। वे सब उदास उदास जा रहे थे। उनको उदास जाते देख कर गंगा ने उनसे पूछा कि वे इस तरह उदास क्यों थे। क्या वह उनकी कुछ सहायता कर सकती थी।

उनमें से एक वसु बोले — "मॉ हम सब वसुओं को महर्षि वशिष्ठ जी[12] ने धरती पर जन्म लेने का शाप दिया है। हम सब लोग इसी लिये दुखी और उदास हैं।

क्योंकि बात केवल धरती पर जन्म लेने की ही नहीं है बल्कि इसकी भी है कि हम वसु हैं। हम किससे जन्म लें और किसके घर में जन्म लें यह भी एक सोचने का विषय है।"

गंगा बोली — "मेरे पिता ने भी राजा महाभिष को और मुझे दोनों को धरती पर जन्म लेने का शाप दिया है। तो अगर आप लोगों को ऐतराज न हो तो मैं आप सब वसुओं की मॉ बन सकती हूँ और आप सबको इस शाप से मुक्ति दिला सकती हूँ।"

आठों वसु यह सुन कर बहुत खुश हुए और यह तय हो गया कि गंगा उन सब वसुओं की मॉ बनेगी और उनको इस शाप से मुक्ति दिलायेगी।

गंगा ने फिर पूछा — "पर आप सब लोगों को एक साथ शाप मिला ही क्यों।

[11] There are 33 gods in Hindu pantheon – 12 Aaditya, 11 Rudra, 8 Vasu and 2 Ashwinee Kumaar.
[12] Maharshi Vashishth Jee was one of the Maanas Putra (brain child) of Brahmaa Jee

इस पर वसुओं ने अपने शाप की कथा गंगा को कुछ इस तरह सुनायी। एक बार आठों वसु अपनी अपनी पत्नियों के साथ महर्षि वशिष्ठ जी के आश्रम[13] में गये। वशिष्ठ जी के पास कामधेनु[14] थी जो उनका रोज का काम करने में सहायता करती थी।

आठों वसुओं में से आठवें प्रभास नाम के वसु की पत्नी को वह गाय बहुत अच्छी लगी सो उसने अपने पति से कहा कि वह उस गाय को चुरा ले। अपनी पत्नी के कहने पर दूसरे वसुओं की सहायता से प्रभास वसु ने वह गाय चुरा ली।

जब वशिष्ठ जी को यह पता चला कि उनकी गाय वसुओं ने चुरायी है तो उन्होंने आठों वसुओं को धरती पर मनुष्य योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया।

वसुओं ने अपनी गलती की क्षमा माँगी तो वशिष्ठ जी ने कहा कि उनका शाप वापस तो नहीं हो सकता हाँ कुछ कम जरूर हो सकता है।

उन्होंने कहा — "जिन वसुओं ने प्रभास को मेरी गाय चुराने में सहायता की है उनको धरती पर मनुष्य योनि में जन्म तो लेना पड़ेगा पर उनकी वहाँ रहने की कोई पाबन्दी नहीं है। उनको केवल जन्म ले कर मरना है।

---

[13] Translated for the word "Hermitage"

[14] Kaam Dhenu was a cow who fulfilled all the wishes. She came out at the time of Saagar Manthan (Churning of Ksheer Saagar) process. In fact six such cows came out of the Ocean. Vashishth Jee had one such cow. Kaam means desire and Dhenu means cow, so Kaam Dhenu means the cow which can fulfill the wishes.

पर हॉ प्रभास जिसने मेरी गाय चुरायी है उसको तो वहॉ रहना ही पड़गा। पर उसका शाप भी मैं कुछ इस तरह से आसान कर सकता हूॅ कि वह अपने समय का बहुत ही मशहूर आदमी होगा।"

सो यह प्रभास वसु ही पितामह भीष्म के रूप में जन्मे। इस तरह राजा महाभिष धरती पर शान्तनु के रूप में जन्मे और उन्होंने गंगा से विवाह किया। और प्रभास वसु उनके घर में उनका बेटा बन कर जन्मे जिसका नाम था देवव्रत।

लेकिन गंगा का काम केवल भीष्म की ही मॉ बनना तो था नहीं उनको तो दूसरे सात वसुओं को भी उनके शाप से मुक्ति दिलानी थी।

सो जब उन्होंने शान्तनु से शादी की तो उन्होंने उनसे इस शर्त पर विवाह किया कि वह जो कुछ करेंगी शान्तनु उनसे यह नहीं पूछेंगे कि वह वैसा क्यों कर रही हैं और जिस दिन भी उन्होंने ऐसा कोई सवाल किया तो उस सवाल का जवाब दे कर वे उनको छोड़ कर चली जायेंगी।

राजा शान्तनु गंगा के प्रेम में इतना पागल थे कि वे उनकी सब शर्तें मान गये। और उनके प्यार के इसी पागलपन का फायदा उठा कर गंगा ने अपने पहले सात बेटों को जन्मते ही गंगा नदी में डुबो दिया जिससे वे सब अपने शाप से मुक्त हो गये।

शान्तनु यह सब केवल देखते ही रहे और अपनी शर्त के अनुसार उनसे कुछ पूछ भी न सके कि वह ऐसा क्यों कर रही थीं नहीं तो गंगा उनको छोड़ कर चली जातीं।

बात यहाँ भी खत्म हो सकती थी पर यह बात अभी भी यहाँ खत्म नहीं हुई। अगर तुमने महाभारत पढ़ी है या उसका टीवी सीरियल देखा है तो तुम सोच रहे होगे कि जन्म तो प्रभास वसु ने ले लिया पर उन्होंने ऐसी ज़िन्दगी क्यों बितायी जैसी कि उन्होंने बितायी।[15]

उनका जन्म तो एक राज परिवार में हुआ था। वह एक राजकुमार थे और वह भी सबसे बड़े तो उन्होंने राजाओं जैसी ज़िन्दगी क्यों नहीं बितायी। इसकी भी एक वजह थी।

वशिष्ठ जी ने उनको कह रखा था कि क्योंकि एक तो वह वहाँ शाप की वजह से जा रहे थे आनन्द के लिये नहीं सो वह वहाँ गृहस्थ की ज़िन्दगी नहीं बितायेंगे और वहाँ अपनी कोई वंश रेखा नहीं छोड़ेंगे।

इसी लिये समय आने पर उन्होंने शादी न करने की और अपनी वंश रेखा धरती पर न छोड़ने की कसम खायी। इन दोनों कसमों को खाने के बाद से इनका नाम भीष्म पड़ गया। भीष्म का अर्थ होता है कोई बहुत ही नामुमकिन काम करने वाला जैसा कि उन्होंने किया।

[15] As you might have read about Shree Raam also that why He had to spend His life like that as He spent it.

वशिष्ठ जी ने उनसे एक बात और कही कि अगर वह चाहते हैं कि इस जन्म के बाद उनकी मुक्ति हो जाये तो उनको उत्तरायण[16] में प्राण छोड़ने चाहिये।

इसी लिये वह महाभारत की लड़ाई खत्म होने के बाद मरण समान होने के बावजूद शर शय्या[17] पर उत्तरायण का इन्तजार करते रहे ताकि वह इस मनुष्य जीवन से मुक्त हो जायें।

इसी लिये भीष्म जी को उनके पिता शान्तनु से इच्छा मृत्यु का वरदान भी दिलवाया गया था ताकि इसी वरदान के असर से वह अपने प्राण उत्तरायण तक बचा सकें और अपने इच्छित समय पर अपने प्राण छोड़ सके।

इस मूल कहानी की समस्या यही है कि यह कहीं खत्म ही होने पर ही नहीं आती। देवव्रत के कुँआरे रहने की कसम खाने के बाद इत्तफाक से राजा शान्तनु अपने दो बेटों चित्रांगद और विचित्रवीर्य को छोटा ही छोड़ कर मर जाते है। बाद में चित्रांगद भी एक लड़ाई में मारा जाता है।

विचित्रवीर्य की दो पत्नियाँ थी पर वह भी उनसे बिना किसी सन्तान को पैदा किये मर जाता है। इस तरह राजा शान्तनु का परिवार बिना किसी वारिस के रह गया।

---

[16] Uttaraayan is the positon of the Sun when the Sun starts coming back from the Line of Capricorn towards Equator and then towards the Line of Cancer. This is a very important and auspicious time. It starts from Makar Sankraanti, 13th or 14th January, every year. In Hindu religion whoever dies between 14th January and 14th July goes to go Swarg via gods' path.

[17] Translated for the words "Bed of Arrows". Shar means arrows and Shayyaa means Bed. Thus Shar Shayyaa means the Bed of Arrows.

तब विचित्रवीर्य की मॉ सत्यवती भीष्म जी से प्रार्थना करती है कि वह विचित्रवीर्य की विधवाओं से सन्तान पैदा करके वंश आगे बढ़ाये पर भीष्म जी ने तो कसम खा रखी थी वह न तो कभी शादी करेंगे और न अपनी वंश रेखा ही छोड़ेंगे सो वह अपनी कसम नहीं तोड़ सकते थे।

तब सत्यवती अपने पहले बेटे वेद व्यास जी को बुलाती है और वह विचित्रवीर्य की दो विधवाओं से दो बेटे पैदा करते हैं – एक अन्धा धृतराष्ट्र और दूसरा बीमार पांडु।

बड़ा बेटा होने के नाते धृतराष्ट्र को राजा हो जाना चाहिये था पर उनको अन्धा होने की वजह से राजा नहीं बनाया गया और पांडु राजा बन गये।

बात फिर यही खत्म नहीं हुई। धृतराष्ट्र अपने अन्धे होने के कारण राजा न बन पाने से से बहुत दुखी थे पर कर कुछ नहीं सकते थे।

धृतराष्ट्र की शादी पहले हुई तो धृतराष्ट्र ने सोचा कि अगर उनकी सन्तान पांडु की सन्तान से बड़ी हुई तो उनको उनका खोया हुआ राज्य वापस मिल जायेगा। धृतराष्ट्र के 100 बेटे हुए और पांडु के पॉच बेटे हुए।

पर बदकिस्मती से धृतराष्ट्र को कोई बेटा पांडु के सबसे बड़े बेटे से बड़ा नहीं था। पांडु के दो बेटे धृतराष्ट्र के सबसे बड़े बेटे से बड़े थे। यही नहीं पांडु के सभी बेटे धृतराष्ट्र के सभी बेटों से

ज़्यादा गुणी भी थे। इस बीच पांडु की मृत्यु हो गयी और धृतराष्ट्र उनकी जगह राजा का काम करने लगे।

धृतराष्ट्र ने अपने बड़े बेटे दुर्योधन को इस इच्छा के साथ बड़ा किया था कि जब वह बड़ा हो जायेगा तो वही राजा बनेगा। वह इच्छा दुर्योधन की इतनी प्रबल थी कि वह पांडु के पाँचों बेटों में से किसी को भी सहन नहीं कर सकता था।

उसने उनको मारने की भी बहुत कोशिश की पर अपनी कोशिशों में कामयाब न हो सका। यहाँ तक कि उसने महाभारत की लड़ाई भी लड़ी पर उसमें भी वह उनको न मार सका। उलटे वह खुद अपने सारे भाइयों के साथ उसमें मारा गया।

इन्हीं सब घटनाओं ने मिल कर महाभारत को जन्म दिया।

अगर महाभिष और गंगा को धरती पर जन्म लेने का शाप न मिला होता तो राजा शान्तनु और गंगा का जन्म न होता।

और अगर आठों वसुओं को धरती पर जन्म लेने का शाप न मिला होता तो भीष्म का जन्म न होता।

अगर सात वसुओं का शाप कम न होता तो शायद आठों वसु ज़िन्दा रहते।

अगर प्रभास वसु के ऊपर बन्दिशें न लगतीं तो शायद भीष्म जी अपनी कसमें न खाते और साधारण रूप से शान्तनु के सबसे बड़े बेटे होने के नाते राजा बन जाते और शायद धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म ही न हुआ होता और यह महाभारत ही न होता।

अगर धृतराष्ट्र अन्धे न पैदा हुए होते तो उनकी राजा बनने की इच्छा पूरी हो गयी होती और उनका बेटा भी राजा बन गया होता।

अगर प्रभास वसु को इच्छा मृत्यु का वरदान न मिला होता तो...

इस तरह बहुत सारे "अगर..." और बहुत सारे "तो..." हैं। इसके बारे में तो बस यही कहा जा सकता है कि "अगर ऐसा न हुआ होता तो यह हो जाता।" और इस परिवार का ही नहीं बल्कि अपने भारत का भविष्य कुछ और ही होता।

तो यह है महाभारत की शुरूआत की कहानी।

3 गीता[18]

गीता दूसरी पुस्तकों की तरह से कोई अलग पुस्तक नहीं है यह महाभारत का ही एक हिस्सा है। इसके अलावा इसमें कोई कहानी भी नहीं है। यह तो भारतीय दर्शन का एक उपदेश है।

पर क्योंकि इसकी रचना की अपनी एक वजह है जिसकी एक कहानी है इसी लिये हमने इसको इस पुस्तक में शामिल कर लिया है।

यह तो तुम्हें मालूम ही है कि महाभारत की लड़ाई दो सौतेले भाइयों के परिवारों के बच्चों की लड़ाई है – धृतराष्ट्र और पांडु के बच्चों की।

जब गंगा ने राजा शान्तनु के सात बेटे बिना किसी कारण के गंगा नदी में डुबो दिये और राजा शान्तनु अपनी शर्त के अनुसार उनसे कुछ न पूछ सके तो वह बहुत दुखी हुए। जब गंगा ने आठवें पुत्र को जन्म दिया और वह उसको भी गंगा नदी में डुबोने चलीं तो राजा शान्तनु से न रहा गया और उन्होंने उनसे पूछ ही लिया कि वह उनके पुत्रों के साथ ऐसा क्यों कर रही थीं।

अपनी शर्त के अनुसार उन्होंने राजा को अपने और वसुओं के शाप की कहानी सुनायी और देवव्रत को ले कर धरती छोड़ कर चली गयीं।

---

[18] Shree Mad-Bhagvad Geetaa is a part of Mahaabhaarat epic.

जब देवव्रत जवान हो गये और पढ़ लिख गये तो वह उनको राजा के पास छोड़ गयीं। राजा ने तुरन्त ही उनको युवराज घोषित कर दिया।

एक दिन उन्होंने सत्यवती को देखा तो उनका मन उससे शादी करने को करने लगा। वह सत्यवती से शादी करना तो चाहते थे पर वे अपने और गंगा के बड़े बेटे देवव्रत के युवराज के अधिकार को छीनना नहीं चाहते थे इसलिये वे दुखी रहने लगे। देवव्रत ने इसके लिये त्याग किया और शादी न करने की कसम खायी और सत्यवती को अपनी माँ के रूप में घर ले आये।

सत्यवती के दो बेटे हुए चित्रांगद और विचित्रवीर्य। चित्रांगद छोटी उम्र में ही एक लड़ाई में मारे गये सो विचित्रवीर्य को राजा बना दिया गया। विचित्रवीर्य की दो पत्नियाँ थीं अम्बिका और अम्बालिका। उन दोनों के एक एक बेटा था। अम्बिका के अन्धे धृतराष्ट्र और अम्बालिका के बीमार पांडु।

धृतराष्ट्र को उनके अन्धे होने की वजह से राजा नहीं बनाया गया तो बचे पांडु। उनको ही राजा बना दिया गया पर वह भी जल्दी ही अपने पाँच बेटों को छोड़ कर मर गये।

उनके मरने की भी एक वजह थी। पांडु बहुत अच्छा शब्दवेधी बाण चलाते थे। एक बार उनके शब्दवेधी बाण से उनसे एक ऋषि की हत्या हो गयी।

मरते समय उस ऋषि ने उनको शाप दिया कि क्योंकि पांडु ने उनको उस दशा में मारा था जब वह अपनी पत्नी के साथ थे तो वह भी तभी मरेंगे जब वह अपनी पत्नी के साथ होंगे।

पांडु ने कहा कि इस पाप का प्रायश्चित तो उनको करना ही पड़ेगा। भीष्म जी विदुर जी और दूसरे कई पंडितों ने उनको समझाने की बहुत कोशिश की कि यह तो एक दुर्घटना थी और तुम राजा हो तो इसके प्रायश्चित की तुमको कोई जरूरत नहीं है पर वह नहीं माने और धृतराष्ट्र को अपना राज्य दे कर वन चले गये।

वहॉ देवताओं द्वारा उनके पॉच बेटे हुए जो पांडु के बेटे होने की वजह से पांडव कहलाये। देवताओं के बेटे होने की वजह से वे सब अपने अपने धर्म का पालन करने वाले थे।

एक बार पांडु अपनी दूसरी पत्नी माद्री के साथ थे तो उस ऋषि के शाप की वजह से वह वहीं मर गये।

उधर धृतराष्ट्र के **100** बेटे थे जो कौरव कहलाये और एक बेटी थी। उनका सबसे बड़ा बेटा दुर्योधन था जो बहुत घमंडी और अत्याचारी था।

अब कहानी यहॉ से आगे शुरू होती है। धृतराष्ट्र क्योंकि बड़े थे और राजा उन्हीं को बनना चाहिये था पर क्योंकि उनको उनके अन्धे होने की वजह से राजा नहीं बनाया गया इसलिये वह अपना राजा बनने के मौके को खोने का जिम्मेदार अपने अन्धे होने को ठहराते थे।

दूसरे वह बड़े थे उनकी शादी भी पहले हुई थी सो वह सोचते थे कि अगर उनका बेटा पांडु के बेटे से बड़ा हो तो कम से कम उनका बेटा ही राजा बन जायेगा और इस तरह से वह अपना खोया हुआ राज्य वापस पा लेंगे। पर ऐसा भी न हो सका।

उधर पांडु के एक भी नहीं बल्कि दो दो बेटे धृतराष्ट्र के सबसे बड़े बेटे दुर्योधन से बड़े थे। इसके अलावा विचित्रवीर्य के बाद भी तो पांडु ही राजा बने थे।

पर धृतराष्ट्र का कहना था कि क्योंकि पांडु ने वह राज्य उनको दे दिया था इसलिये अब राजा वह थे और उनके बाद उनके बेटे को ही राजा होना चाहिये।

सो दो समूह थे एक तो धृतराष्ट्र और उनके बेटे दुर्योधन का जो यह समझता था कि राजा के सबसे बड़े बेटे को ही राजा होना चाहिये। और दूसरा समूह था भीष्म और विदुर जी का जो यह समझता था कि किसी लायक बेटे को राजा होना चाहिये अत्याचारी को नहीं।

इस पशोपेश में धृतराष्ट्र बड़ा बेटा दुर्योधन पांडु के बेटों से बहुत जलता था क्योंकि वह यह समझता था कि कुरु वंश के बड़े बेटे का बड़ा बेटा होने के नाते राजा उसी को बनना चाहिये।

उसने पांडवों को मारने की भी कई बार कोशिश की पर नहीं मार पाया बल्कि उन घटनाओं के बाद से पांडव और ज़्यादा ताकतवर हो गये।

इससे दुर्योधन बहुत गुस्सा हुआ और अपने मामा शकुनि के साथ मिल कर उसने उनके साथ जुआ खेला जिसमें उसने उनको दो बार हरा दिया।

जुए में पहली बार हराने के बाद तो उसने पांडवों की पत्नी द्रौपदी का वस्त्र हरण भी किया। उस समय भीम ने कसम खायी कि वह धृतराष्ट्र के सौ बेटों को मार देगा और अपनी गदा से दुर्योधन की जाँघ तोड़ देगा।

दूसरे बार के जुए की शर्तों के अनुसार पांडवों को 12 साल वन में रहना था और एक साल छिप कर रहना था[19] कि कोई उनको पहचाने नहीं।

यह वनवास पूरा होने पर वह उनको उनका राज्य वापस कर देगा। पर अगर इस एक साल के बीच वे पहचान लिये गये तो उनको फिर से 13 साल के वनवास के लिये जाना पड़ेगा।

पर जब पांडवों का 13 साल का वनवास पूरा हो गया तब भी दुर्योधन ने उनका राज्य उनको वापस नहीं किया बल्कि उनको लड़ाई के लिये ललकारा।

श्रीकृष्ण और पांडव जानते थे कि वनवास पूरा होने के बाद भी दुर्योधन उनको उनका राज्य नहीं देगा सो इस 13 साल के वनवास के बीच उन्होंने उस लड़ाई के लिये अर्जुन को तैयार किया। वह स्वर्ग जा कर दैवीय अस्त्र शस्त्र ले कर आया।

---

[19] Translated for the word “Incognito”. In Hindi it is called as “Agyaatvaas”.

जैसा उन लोगों ने सोचा था वैसा ही हुआ। वनवास खत्म होने के बाद भी दुर्योधन ने पांडवों को उनका राज्य नहीं दिया और लड़ाई तय हो गयी।

पर जब दोनों सेनाऐं लड़ाई के मैदान में इकट्ठा हुईं और अर्जुन ने अपने दुश्मन की सेना को देखा तो उसको मोह हो गया और वह अपना धनुष रथ में नीचे डाल कर यह कह कर बैठ गया कि मैं यह लड़ाई नहीं लडूँगा।

श्रीकृष्ण उसके सारथी थे। उसके ऐसा कहने पर श्रीकृष्ण ने उसको गीता का उपदेश दिया जिसमें उसको उसका कर्तव्य बताया। अगर अर्जुन ने युद्धभूमि में अपने हथियार न डाले होते तो श्रीकृष्ण को उसे गीता का उपदेश देने की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती और हम लोग बहुत सी उपयोगी बातों को जानने से रह जाते।

आज यही गीता संसार के बहुत देशों में पढ़ी जाती है। लोग इसको हिन्दू धर्म की किताब नहीं मानते बल्कि जीवन का दर्शन मानते हैं। इसी लिये **150** से भी ज़्यादा भाषाओं में इसका अनुवाद भी किया जा चुका है।

यह श्री मद्‌भग्वद गीता के नाम से मशहूर है। भग्वद माने भगवान का और गीता माने गीत। क्योंकि यह भगवान के खुद के मुँह से निकली है इसलिये इसको भगवान का गीत[20] भी कहते हैं।

[20] Translated for the words “God’s Song”

तो गीता इसलिये कही गयी। लड़ाई के मैदान में अगर अर्जुन को मोह नहीं होता और वह हथियार फेंक कर नहीं बैठ जाता तो गीता का शायद जन्म ही नहीं होता।

इस सबको पढ़ कर क्या तुम यह बता सकते हो कि इसको कहा सुना किसने? तुम कहोगे यह तो साफ है कि इसे श्रीकृष्ण ने कहा और अर्जुन ने सुना।

तुमने ठीक कहा। पर ऐसा नहीं है। इसे केवल अर्जुन ने ही नहीं सुना। तो तुम पूछोगे "तो फिर वहाँ और कौन था इसे सुनने के लिये?"

धृतराष्ट्र अन्धे थे इसलिये वह इस लड़ाई को देख नहीं सकते थे। लड़ाई शुरू होने से पहले महर्षि वेद व्यास जी उनके पास आये और उनसे पूछा कि क्या वह यह लड़ाई देखने के लिये दिव्य दृष्टि लेना चाहते हैं पर धृतराष्ट्र ने मना कर दिया।

फिर भी व्यास जी जानते थे कि वह जरूर उस लड़ाई के बारे में जानने की कोशिश करेंगे सो वह उनके सारथी संजय को वह दृष्टि दे कर चले गये। फिर भी धृतराष्ट्र ने 10 दिन तक वहाँ का हाल जानने की इच्छा प्रगट नहीं की। उसे विश्वास था कि इस युद्ध में उसका पुत्र में दुर्योधन ही जीतेगा।

क्यों? क्योंकि धृतराष्ट्र को मालूम था कि जब तक भीष्म ज़िन्दा हैं न तो कोई उसके बेटों को हरा सकता है और न कोई उनको मार सकता है।

पर जब दसवें दिन लड़ाई के मैदान से यह समाचार आया कि भीष्म जी घायल हो गये तब धृतराष्ट्र के सब्र का बॉध टूट गया और उन्होंने संजय से वहॉ का हाल बताने के लिये कहा। इसलिये संजय ने यह गीता सुनी। तो दूसरा आदमी संजय था जिसने यह गीता सुनी।

एक बार दूसरे नम्बर के पांडव भीम को रास्ते में हनुमान जी मिल गये थे तो भीम के बड़े भाई होने के नाते उन्होंने भीम से कोई वर मॉगने के लिये कहा तो भीम ने कहा कि हमारी एक लड़ाई होने वाली है आप उस लड़ाई में हमारा साथ दें।

हनुमान जी ने कहा जब श्रीकृष्ण तुम्हारे साथ हैं तो तुमको किसी दूसरे के साथ की कोई जरूरत ही नहीं है पर फिर भी जब तुमने मुझसे मेरी सहायता मॉगी है तो मैं तुम लोगों के साथ जरूर रहूॅगा।

मैं अर्जुन के रथ के झंडे पर बैठूॅगा और उसके रथ का झंडा युद्ध के मैदान में सबसे ऊॅचा रखूॅगा ताकि सब लोग उसे देख सकें और उसके रथ को युद्ध के मैदान में बिना किसी रोक टोक के इधर उधर जाने में सहायता करूॅगा।”

इस तरह जब भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से गीता कही तब हनुमान जी उनके रथ के झंडे पर बैठे हुए थे सो उन्होंने भी गीता सुनी। इस तरह हनुमान जी तीसरे आदमी थे जिन्होंने गीता सुनी।

यह गीता महर्षि वेद व्यास जी ने भी सुनी और सुन कर महाभारत में लिखी।

इस तरह केवल चार लोगों ने गीता सुनी – अर्जुन ने, संजय ने, हनुमान जी ने और वेद व्यास जी ने।

और इसलिये गीता लिखी गयी।

4 श्री मद्भागवत पुराण[21]

ऐसी चौथी पुस्तक हमने चुनी है श्रीमद्भागवत पुराण। यह हिन्दुओं के **18** महापुराणों में से एक मुख्य पुराण है। वैसे तो अठारहों पुराण महर्षि वेद व्यास जी के लिखे हुए माने जाते हैं पर फिर भी इस पुराण का अपना कुछ अलग ही महत्व है। इसी लिये इसको "सुख सागर" भी कहते हैं।

और यह महत्व शायद इसलिये भी है क्योंकि वेद व्यास जी ने यह पुराण बड़े खास हालात में लिखा था। आज हम तुम्हें यह बतायेंगे कि वे खास हालात क्या थे जिनमें उन्होंने इसे लिखा।

जब व्यास जी ने महाभारत लिख दिया तो वह इस परिवार के दुख और बरबादी से बहुत दुखी हो गये। वह जा कर गंगा नदी के किनारे बैठ गये। वह वहाँ बहुत देर तक बहुत दुखी बैठे रहे कि नारद जी वहाँ आये और उनसे पूछा कि वे इतने उदास और दुखी क्यों बैठे हैं।

व्यास जी ने उनको बताया कि हालाँकि उन्होंने इतना बड़ा ग्रन्थ लिखा पर उनके मन को शान्ति नहीं है। वह इस परिवार की बरबादी से कुछ ज़्यादा ही दुखी हो गये हैं क्योंकि इस ग्रन्थ में केवल उस परिवार की ही बरबादी ही नहीं थी बल्कि भारत के एक बहुत बड़े हिस्से की बरबादी भी थी।"

[21] Shree Mad-bhaagvat Puraan – one of the 18 Mahaa Puraan written by Maharshi Ved Vyaas Jee.

तब नारद जी बोले — "महर्षि मेरा अपना विचार यह है कि जब तक मनुष्य भगवान की कहानी नहीं कहता उस परम पिता की प्रशंसा नहीं करता उसके मन को शान्ति नहीं मिलती।

सो अगर आप मेरी बात मानें तो भगवान की कहानी लिखें। मुझे विश्वास है कि उसको लिखने के बाद आपके मन को शान्ति अवश्य ही मिलेगी।"

तब व्यास जी ने भागवत लिखने के बारे में सोचा जिसमें उन्होंने विष्णु के बारे में लिखने का विचार किया। उनके जीवन के बारे में लिखने का अर्थ था उनके अवतारों के बारे में लिखना।

क्योंकि उस समय तक श्रीकृष्ण विष्णु के मानव रूप में आखिरी अवतार थे इसलिये उन्होंने इस पुराण में उनके इसी अवतार का बहुत विस्तृत रूप में वर्णन करने का विचार किया।

कहते हैं कि यह भागवत पुराण लिखने के बाद ही उनके मन को शान्ति मिली। इसी लिये लोग इसको सुख सागर भी कहते हैं क्योंकि इसको पढ़ने के बाद सुख की अनुभूति होती है।

इसमें 12 स्कन्ध[22] हैं जो कई अध्यायों में बँटे हुए हैं। इसका दसवाँ स्कन्ध सबसे बड़ा है जो दो भागों में बँटा है। उसी में श्रीकृष्ण के जीवन की सब घटनाओं का वर्णन है। इस पुराण को लोग श्रीकृष्ण के जीवन की घटनाओं को जानने के लिये मूल स्रोत के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

---

[22] Used for "Sections"

इसी लिये इसको लिखने का यह एक मुख्य उद्देश्य था कि इसको लिखने के बाद ही महर्षि वेद व्यास जी को महाभारत लिखने के बाद पैदा हुई जो अशान्ति हो रही थी उससे मुक्ति मिल पायी।

इसमें भारत का पूरा इतिहास भी दिया हुआ हैं।

5 पंचतन्त्र[23]

लोक कथाओं का पहला संग्रह ईसप की कहानियों का और दूसरा संग्रह जातक कथाओं का, और तीसरा विशद संग्रह भारत की पंचतन्त्र की कहानियों का हैं जो पंडित विष्णु शर्मा ने मूल रूप से संस्कृत में लिखी थीं। बौद्ध लोगों ने इनको पाली भाषा में भी लिखा है।

इस संग्रह का लेखन काल ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के लगभग का बताया जाता है। ये सब कथाऐं पशु पक्षियों की हैं और पुरानी लोक कथाओं पर आधारित हैं।

और क्योंकि यह भारत का सबसे अधिक अनुवादित लोक कथा संग्रह है इसलिये इसकी कथाऐं कई दूसरे देशों की लोक कथाओं में भी मिल जाती हैं।

पंचतन्त्र की ये कथाऐं पंडित विष्णु शर्मा ने क्यों लिखी थीं। अब तुम कहोगे कि कहानियाँ क्यों लिखी जाती हैं पढ़ने के लिये न सो उसने भी ये कहानियाँ ऐसे ही लिखी होंगी।

पर ऐसा नहीं है। ये कहानियाँ एक खास उद्देश्य से लिखी गयी थीं। और वह उद्देश्य क्या था? एक राजा अमरशक्ति थे जिनके तीन बेवकूफ बेटे थे उनको पढ़ाने के लिये ये कहानियाँ लिखी गयी

---

[23] Panchtantra stories.

थीं। इसकी मूल कहानी में एक राजा एक गुरू ढूँढता है जो उसके तीन बेवकूफ बेटों को पढ़ा दे।

वह गुरू उन कहानियों के द्वारा इस राजा के तीन बेवकूफ बेटों को पढ़ाता है और उन राजकुमारों को होशियारी और अक्लमन्दी सिखाता है। इस तरह इस मूल कहानी के अन्दर ये बहुत सारी कहानियाँ हैं।

लोगों का विश्वास है कि ये कहानियाँ विश्व भर में **50** भाषाओं में **200** रूपों में पायी जाती हैं। इसके **25** रूपान्तर तो अकेले भारत में ही पाये जाते हैं। ये कहानियाँ भारत में बहुत मशहूर हैं।

भारत का अधिकतर हर बच्चा इसकी कम से कम एक कहानी तो सुन कर बड़ा होता ही है। हालॅकि यह जरूरी नहीं है कि वह यह भी जानता हो कि वह कहानी जो वह सुन रहा है वह पंचतन्त्र की कहानियों से ली गयी है या नहीं।

हितोपदेश[24], भारत की लोक कथाओं का एक और संकलन, की कहानियाँ भी इसी से प्रेरित हो कर लिखी गयी हैं।

11वीं शताब्दी तक इस संग्रह की कई कहानियाँ फारस, अरब, यूनान देश होते हुए यूरोप के कई देशों की कहानियों में जा कर मिल गयीं और फिर **16**वीं शताब्दी तक तो ये कहानियाँ यूरोप की

[24] Hitopadesh Tales were written by Narayan. Durgasingh translated in Kannad language in 1031 AD, Poornbhadra’s translation in 1199 AD.

कई भाषाओं में मिलने लगी थीं। ये कहानियाँ इस्लाम आने से पहले छठी शताब्दी में ईरान में पहलवी भाषा में भी पायी जाती हैं।

18वीं शताब्दी से पहले पहले इसके कम से कम **20** अंग्रेजी अनुवाद हो चुके थे।

इसकी कहानियाँ बहुत सारे विषयों पर हैं। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक कहानी में से दूसरी कहानी निकलती जाती है जैसे फारस की अरेबियन नाइट्स[25] की कहानियों में एक कहानी में से दूसरी कहानी निकलती है।

हालाँकि अरेबियन नाइट्स की सारी कहानियाँ एक में से दूसरी नहीं निकलती हैं उनमें से कुछ अलग से भी आरम्भ होती हैं और अकेली ही समाप्त हो जाती है पर फिर भी ऐसी उसमें बहुत सी कहानियाँ हैं।

इसके थोड़े से परिचय के बाद ही ये कहानियाँ पाँच हिस्सों में बँटी हुई हैं। इसके हर हिस्से की पहली एक कहानी एक मुख्य कहानी है जिसमें से कभी कभी **4–5** स्तर नीचे तक ये कहानियाँ चलती चली जाती हैं।

एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। वह उन्हें छह महीने के अन्दर अन्दर ज्ञान और अक्लमन्दी सिखवाना चाहता था। विष्णु शर्मा ने यह बीड़ा उठाया और उनको रोचक कहानियों के द्वारा ज्ञान

---

[25] "Arabian Nights" or "One Thousand and One Nights" from Persian Empire. At one time Persian Empire was very large – from far Western part of India to Iran, Iraq, Arab and even up to a part of Ethiopia in Eastern Africa, so no wonder if these stories were told and heard in these countries too.

और अक्लमन्दी सिखायी। पर वे कहानियाँ केवल उन्हीं तीन छोटे राजकुमारों को पढ़ाने के काम नहीं आयीं बल्कि वे बच्चे बूढ़े सबको ज्ञान दे पायीं।

सो उन बच्चों को पढ़ाने के बहाने विष्णु शर्मा ने इन कहानियों को लिखा था। इनको उन्होंने संस्कृत में लिखा था पर फिर बाद में ये कहानियाँ कई भाषाओं में अनुवादित हो कर बहुत सारे देशों में पहुँच गयीं। तो यह थी पंचतन्त्र की कहानियों की शुरूआत की वजह। इसलिये लिखी गयीं थीं वे।

6 भतृहरि के तीन शतक[26]

तीन शतक पुस्तकें इतनी ज़्यादा मशहूर नहीं हैं जितनी इस पुस्तक में दी गयी और पुस्तकें मशहूर हैं पर क्योंकि इन तीनों शतकों के लिखने की अपनी एक वजह है जो बहुत ही मजेदार है इसलिये इनको इस पुस्तक में शामिल कर लिया गया है।

शतक का मतलब होता है सौ। असल में इन तीनों शतकों में संस्कृत में चार चार लाइनों में लिखे सौ सौ पद हैं इसी लिये ये शतक कहलाते हैं। इनका नाम है "नीति शतक" "श्रंगार शतक" और "वैराग्य शतक"। ये तीनों शतक राजा भतृहरि ने लिखे हैं।

अब हम तुम्हें यह बताते हैं कि राजा भतृहरि ने ये तीनों शतक अपनी किन तीन मनःस्थिति में लिखे।

राजा भर्तृहरि उज्जयिनी नगरी के राजा गन्धर्वसेन के बड़े बेटे थे। इनका एक छोटा भाई भी था जिसका नाम था विक्रमादित्य जिनकी "विक्रम बेताल" की कहानियॉ बहुत मशहूर हैं।

गन्धर्वसेन के मरने के बाद भर्तृहरि राजा बने। अभी इनके बाबा ज़िन्दा थे सो उन्होंने भर्तृहरि और विक्रम दोनों को राजनीति की शिक्षा दी कि जब वे राजा बनें तब उनको किस तरह बरतना चाहिये। इस शिक्षा को उन्होंने "नीति शतक" नाम की पुस्तक में लिखा।

[26] Three Shataks of the King Bhartrahari

एक बार राजा भर्तृहरि को पता चला कि उनको राज्य में चोर डाकू और जंगली जानवरों का कुछ ज़रा ज़्यादा ही बोल बाला हो गया है सो वह खुद इसकी जॉच पड़ताल के लिये जंगलों की तरफ निकल गये।

जब वह जंगलों से वापस आ रहे थे तो रास्ते में उनको एक बहुत सुन्दर लड़की मिली। भर्तृहरि उसकी ओर आकर्षित हो गये और उसको अपने महल ले आये और अपनी रानी बना लिया। उसका नाम पिंगला था। यह उनकी सबसे छोटी रानी थी।

उनकी यह रानी बहुत सुन्दर थी। भर्तृहरि उसकी सुन्दरता का गुलाम बन कर रह गये थे। वह उस समय अपनी सबसे छोटी रानी पिंगला के प्यार में डूबे हुए थे। वह उनके प्यार में इतने डूबे हुए थे कि उसी समय उन्होंने अपना दूसरा शतक लिखा "श्रंगार शतक"।

उसके प्यार के लिये समय निकालने के लिये उन्होंने लड़ाई की देखभाल करने के लिये अपना एक आदमी तैनात किया हुआ था। उसका नाम था महीपाल। भर्तृहरि का प्यार पिंगला के लिये एक बन्धन बन गया था सो पिंगला महीपाल की तरफ आकर्षित हो गयी। तीनों खुश थे कि एक दिन...

उज्जयिनी में राजमहल के पास ही एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे अपने दिन बहुत ही गरीबी में गुजार रहे थे कि एक दिन उस ब्राह्मण को कल्प वृक्ष का एक फल मिल गया।

ब्राह्मण ने सोचा कि वह उस फल को राजा को दे कर कुछ धन ले लेगा जिससे उसकी गरीबी दूर हो जायेगी सो वह उस फल को राजा भर्तृहरि के पास ले गया और उसके गुण बता कर उसको दे दिया।

राजा भतृहरि ने उससे वह फल ले लिया और उसको उस फल के बदले में जितना सोना वह ब्राह्मण ले जा सकता था उसको दे दिया। राजा भर्तृहरि ने वह फल अपनी सबसे प्रिय रानी पिंगला को दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान बनी रहे।

रानी ने एक बार कहा भी कि या तो इसे तुम खा लो या फिर हम दोनों मिल कर इसको खाते हैं पर राजा भर्तृहरि बोले कि वह फल केवल एक आदमी लिये ही था इसलिये उसको वही खा ले।

राजा भर्तृहरि के जाने के बाद पिंगला ने महीपाल को बुलाया और वह फल उसको दे दिया ताकि उसका प्रेमी हमेशा जवान रह सके।

महीपाल एक लखा नाम की वेश्या के पास जाया करता था सो उस फल के गुण उसको बता कर उसने वह फल उसको दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान रहे।

लखा ने सोचा कि यह फल तो राजा के खाने के काबिल है मैं इसको खा कर क्या करूँगी। मैं तो वेश्या हूँ मेरी तो ज़िन्दगी ही बेकार है सो वह फल उसने राजा भर्तृहरि को दे दिया।

जैसे ही राजा ने फल की तरफ देखा तो उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। उसको धन और प्रेम दोनों ही बेकार लगे। उसने दुनियॉ छोड़ने का विचार कर लिया पर जाने से पहले रानी से एक बार मिलना ठीक समझा।

उसने रानी से पूछा तुमने उस फल का क्या किया जो मैंने तुम्हें खाने को दिया था। रानी को किसी बात का कुछ पता नहीं था सो वह बोली "मैंने तो वह फल खा लिया।"

इस पर उसने रानी को वह फल दिखा कर कहा "पर यह तो मेरे पास है।" यह सुन कर रानी के मुॅह से तो एक शब्द भी नहीं निकला। राजा भर्तृहरि ने उसी समय रानी को मरवा दिया और वह फल धो कर खा लिया।

उसके बाद बिना किसी से बात किये वह योगी बन गये। इस स्थिति में लिखा उन्होंने "वैराग्य शतक"। उनके ये तीनों ही शतक अपने अपने मूल्यों में अद्वितीय हैं।

जब तक कोई आदमी उन भावों को अपने दिल में महसूस न करे वह ऐसी रचना नहीं कर सकता। और ऐसे भाव जब कोई उस परिस्थिति से खुद गुजरता है तभी महसूस कर सकता है।

कुछ का कहना है कि वह अभी भी योगी बने घूम रहे हैं और कुछ का कहना है कि भगवान ने उन्हें अपने अन्दर समा लिया है।

7 विक्रम बेताल की कथाऐं[27]

बच्चों तुमने सबने विक्रम बेताल की कथाऐं तो पढ़ी ही होंगी। सारी नहीं तो काम से कम कुछ तो पढ़ी ही होंगी। आज यह जान लो कि ये कथाऐं क्यों कही गयीं।

राजा भर्तृहरि के राज्य छोड़ कर जाने के बाद उनके छोटे भाई विक्रमदित्य राजा बन गये। भर्तृहरि ने तो खुद ने ही तीन शतक लिखे पर विक्रमदित्य भी कम प्रतापी राजा नहीं थे। उनकी अपनी और उनके सिंहासन की कोई कम कहानियाँ प्रसिद्ध नहीं हैं।

इन चार धार्मिक पुस्तकों की, यानी रामायण महाभारत गीता और भागवत पुराण की शुरूआत बताने के बाद भी अभी इनमें से एक और पुस्तक के बारे में तुम्हें कुछ बताना बाकी रह गया है। हमने तुम्हें बताया था कि हिन्दू धर्म में **18** महापुराण हैं जो सारे ही महर्षि वेद व्यास जी के लिखे माने जाते हैं।

उनमें से एक महापुराण श्री मद्भागवत पुराण में श्रीकृष्ण के जीवन की पूरी कहानी दी हुई है जिसको सुख सागर भी कहते हैं। जिसके बारे में हम तुम्हें बता चुके हैं कि वह क्यों लिखा गया था। उन्हीं **18** महापुराणों में से अब हम एक दूसरे महापुराण के बारे में तुम्हें बताना चाहते हैं।

---

[27] Vikram Betal Stories. Read them in English on the Web Site : http://www.sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/index-vaitaal.htm
Other information is also taken from the same Web Site.

हालॉकि हम यहॉ उस महापुराण के बारे में यह बताने नहीं जा रहे हैं कि वह क्यों लिखा गया पर उस महापुराण में इन कथाओं का जिक्र आता है इसलिये उसका जिक्र करना यहॉ उचित समझा गया।

तो बच्चों विक्रम बेताल की ये कथाऐं ऐसे ही नहीं कही गयीं। इनके कहने की भी एक वजह थी। क्या तुम वह वजह जानते हो? और अगर नहीं जानते हो तो क्या वह वजह जानना चाहोगे जिसकी वजह से ये सब कहानियॉ कही गयीं? हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि तुम वह वजह जरूर जानना चाहोगे। तो लो पढ़ो वह वजह।

ये कहानियॉ महाराजा विक्रमादित्य और एक बेताल[28] के बीच कही सुनी गयी हैं। पर इन कहानियों के कहने की वजह जानने से पहले अगर तुम राजा विक्रम के बारे में कुछ जान लो तो ज़्यादा अच्छा रहेगा।

राजा विक्रमादित्य[29] या विक्रम का नाम भारत में बहुत मशहूर और लोकप्रिय है। उनके बारे में उनकी बहुत सारी कहानियॉ भी उतनी ही मशहूर ओर लोक प्रिय हैं। ये उज्जैन के राजा थे और ईसा पूर्व पहली शताब्दी में थे।

---

[28] Betaal or Baitaal or Vetaal or Vaitaal is a kind of Ghost (or vampire in Western literature).

[29] Read about Vikram on the Web Site :
http://www.sushmajee.com/reldictionary/sketches/sketches-n-z/sk-vikram-1.htm

तुमने बादशाह अकबर के दरबार के नौ रत्नों के नाम तो सुने ही होंगे जिनमें बीरबल और तानसेन का नाम सबसे ज़्यादा मशहूर है। इसी तरह राजा विक्रमादित्य के दरबार में भी नौ रत्न थे।

असल में बादशाह अकबर ने यह परम्परा राजा विक्रम से ही ली थी। राजा विक्रमादित्य और उनके नौ रत्नों के नामों से भी सैकड़ों कहानियाँ जुड़ी हुई हैं।

इसके अलावा हम लोग विक्रम संवत भी इस्तेमाल करते हैं वह भी इन्होंने ही चलाया था पर बस आश्चर्य की बात यह है कि इनसे जुड़ी हुई इन कहानियों और विक्रम संवत के अलावा इनके होने का और कोई सबूत नहीं मिलता।

विक्रम और बेताल की कथाऐं जो तुम लोग आज पढ़ते या सुनते हो वे "बेताल पच्चीसी" नाम की पुस्तक में पायी जाती हैं।

इन कहानियों का जिन्हें हम आज पढ़ते हैं असली स्रोत बृहत् कथा[30] है। पर बृहत् कथा क्योंकि सारी नहीं मिलती उसका केवल एक भाग ही मिलता है "कथा सरित् सागर"[31] के रूप में, तो ये कहानियाँ उसी कथा सरित् सागर की 12वीं पुस्तक का एक हिस्सा हैं।

अब क्योंकि बृहत् कथा का स्रोत दैवीय है इसलिये इन कहानियों का स्रोत भी दैवीय ही समझना चाहिये।

[30] Read about Brihat Kathaa later in this book.

[31] Read about Kathaa Sarit Saagar later in this book.

आश्चर्य की एक और बात यह भी है कि "बेताल पच्चीसी" की इन **25** कहानियों के अलावा विक्रम बेताल की नौ कथाऐं हिन्दू धर्म के **18** महापुराणों में से एक भविष्य पुराण[32] के तीसरे हिस्से में भी पायी जाती हैं। उसकी सारी नौ कथाऐँ इन **25** कथाओं से नामों और सन्दर्भ में बिल्कुल अलग हैं।

इस तरह से विक्रम बेताल की कथाओं के दो सैट हो गये – एक तो भविष्य पुराण में पाया जाने वाला नौ कथाओं का सैट और दूसरा कथा सरित सागर में **25** कथाओं का पाया जाना वाला सैट। यहाँ हम तुमको दोनों सैटों की शुरूआत की कहानी बतायेंगे।

बेताल पच्चीसी की पच्चीस कथाऐं

बेताल पच्चीसी करीब **1000** साल पहले महाकवि सोमदेव भट्ट[33] ने संस्कृत में लिखी थी। क्योंकि ये **25** कहानियाँ हैं और एक बेताल ने कही हैं इसी लिये इनको बेताल पच्चीसी का नाम दिया गया है।

ये सब कहानियाँ एक बेताल ने राजा विक्रमादित्य से कही थीं और ये सारी कहानियाँ अपनी अक्लमन्दी के लिये बहुत मशहूर हैं इसी लिये आज भी ये कई भाषाओं में पढ़ी जा सकती हैं।

---

[32] Read these nine stories of Bhavishya Puraan in English on the Web Site : http://www.sushmajee.com/hindupuraan/9bhavishya/3-prati/7-vikram-1.htm
Read them in Hindi either in Bhavishya Puraan published by Gita Press, Gorakhpur, or in the Book "Vikram Betaal Ki Kahaniyan: Puraan Se", by Sushma Gupta in Hindi language.
Bhavishya Puraan says that "Vikramaaditya's tales are found in Skand Puraan, Brihat Kathaa, Sinhaasan Batteesee, Katha Sarit Saagar, Purush Pareekshaa etc books.

[33] The Great Poet Somdev Bhatt has written another folktales book "Katha Sarit Saagar" in 11th century still based on older materials now lost. Read about it later in this book.

आजकल ये कथाऐं हीं चलन में हैं इसलिये लोग इन्हीं को जानते हैं इन्हीं को पढ़ते और कहते सुनते हैं।

इसकी भी एक शुरू की मूल कहानी है जिसके सन्दर्भ में ये सब कहानियॉ कही गयी हैं। यहॉ हम तुम्हारे लिये इन प्रचलित कहानियों के शुरूआत की ही कहानी दे रहे हैं।

राजा विक्रमादित्य कौन थे

क्योंकि ये कहानियॉ राजा विक्रमादित्य की है तो पहले हम यह जान लें कि यह राजा विक्रमादित्य थे कौन। राजा विक्रमादित्य उज्जयिनी[34] के राजा थे।

ये गुप्त साम्राज्य के खत्म होने के बाद आये और अपने राज्य के 14वें साल में देहली से राज कर रहे राजा शकादित्य को जीत कर वहॉ के राजा बन गये पर उनकी राजधानी उज्जयिनी ही रही।

राजा शकादित्य को हराने के बाद लोग इनको शकारि के नाम से भी पुकारने लगे। शकारि माने शक लोगों के दुश्मन।

इनके राज दरबार के नौ रत्न थे – वैद्य धनवन्तरि, क्षपनक, अमर सिंह, वैताल भट्ट, वराहमिहिर ज्योतिषी जिसने राजा विक्रमदित्य के बेटे की मृत्यु की भविष्यवाणी की[35], वररुचि एक साहित्यिक आदमी, शंकु भट्ट, घटकरपर और महाकवि कालीदास।

[34] Ujjayinee or Avantee is present day Ujjain in Madhya Pradesh

[35] Read this story in "Jo Hona Tha Ho Ke Raha" book written by Sushma Gupta in Hindi.

इनके नाम से विक्रम संवत भी चलता है जिसे हम आज भी इस्तेमाल करते हैं। ये प्रतिष्ठानपुर के राजा शालिवाहन या सातवाहन[36] के साथ लड़ते हुए मारे गये थे।

2000 साल से भी पहले उज्जयिनी में एक गन्धर्वसेन[37] नाम के राजा के घर में एक राजकुमार ने जन्म लिया जिसका नाम विक्रमादित्य या विक्रम रखा गया। राजा गन्धर्वसेन के चार रानियाँ थीं जिनसे उनके छह बेटे थे। उनकी सब रानियाँ एक दूसरी से ज़्यादा ताकतवर और अक्लमन्द थीं।

कुछ समय बाद गन्धर्वसेन की मृत्यु हो गयी और उनका सबसे बड़ा बेटा शंक राजा बन गया पर उनके छोटे बेटे विक्रमदित्य ने उसको तुरन्त ही मार दिया और भर्तृहरि राजा बन गये। इससे लोग विक्रम को "वीर" कहने लगे यानी "वीर विक्रमादित्य"। धीरे धीरे भर्तृहरि का राज्य बहुत बढ़ गया।

विक्रम के बाबा यानी देवराज इन्द्र ने अपने दो पोतों भर्तृहरि और विक्रम को बुलाया और उनको उनके भविष्य के लिये सब बातों की शिक्षा दी। दोनों भाई आपस में अक्सर राजा के कर्तव्यों पर बात किया करते थे।

---

[36] All Puraan (Matsya, Vaayu, Brahmaand, Bhaagvat, Vishnu) state that Saatvaahan Dynasty started in 1st century BC. And Vikram was killed whle fighting with him. This shows that Vikram was also in those times. And since he was in those times, Kalidas, Vararuchi, Varaahmihir etc (nine gems of his court) must also be in those times. But it is not so. Their dates vary from one source to another.

[37] According to Kathaa Sarit Saagar Vikram's father's name was Mahedraaditya of the Parmaar Dynasty during 1st century BC. However general Indian history does not place any Vikramaaditya during this period.

राजा भर्तृहरि के राज्य छोड़ कर जाने के बाद जब विक्रम राजा बन गया तो उसने राजा के सारे कर्तव्य निभाये। जब वह 30 साल का था तो उसके कई पत्नियों से कई बेटे थे। वह अपने सबसे बड़े बेटे के अलावा क्योंकि वह उसका वारिस था अपने दूसरे सब बेटों को बहुत प्यार करता था।

एक बार राजा विक्रम ने सोचा कि उसको छिपे रूप से अपने राज्य की कुशलता का पता लगाना चाहिये सो उसने अपने दूसरे बेटे धर्मध्वज को अपने साथ लिया, एक साधु का रूप रखा और अपना राज्य देखने निकल पड़ा।

कुछ समय बाद ही वह अपने इस वेष से तंग आ गया तो वह अपनी राजधानी लौटने के बारे में सोचने लगा।

राजा विक्रम की वापसी

राजा विक्रम के जाने से राज सिंहासन खाली हो गया तो देवराज इन्द्र ने पृथ्वीपाल नाम का अपना एक बड़े साइज़ का आदमी[38] उज्जयिनी की रक्षा के लिये भेज दिया। वह दिन रात उज्जयिनी की रक्षा करता था।

[38] Translated for the word “Giant”. This story is not mentioned in any Sanskrit version except that Lal writes it in his translation and has a close analog in the “Thity-two Tales of the Throne of Vikramaiditya” (“Sinhaasan Dwaatrinshikaa” in Sanskrit and “Sinhaasan Batteesee” in Hindi). Richard Burton includes it in in his introduction.

एक साल के अन्दर अन्दर जब विक्रम आधे कपड़े पहने घूमते घूमते थक गये तो वह अपने बेटे के साथ उज्जयिनी वापस आ गये।

जब वे दोनों उज्जयिनी वापस आये तो आधी रात हो रही थी। जब वे अपने शहर में घुस रहे थे तो वह बड़े साइज़ का आदमी उठा और उसने विक्रम से पूछा — "तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?"

विक्रम बोले — "मैं राजा विक्रमादित्य हूँ और अपने शहर में जा रहा हूँ। तुम कौन होते हो मुझे रोकने वाले?"

पृथ्वीपाल बोला — "देवताओं ने मुझे इस शहर की रक्षा करने के लिये भेजा है। और अगर तुम वाकई राजा विक्रमादित्य हो तो पहले मुझसे लड़ो तभी तुम इस शहर में अन्दर घुस सकते हो।"

पृथ्वीपाल की तो मुट्ठी भी तरबूज जितनी बड़ी थी और विक्रम तो उसके पेट तक ही आ पा रहा था फिर भी दोनों में लड़ाई शुरू हुई। विक्रम की खुशकिस्मती से पृथ्वीपाल का बॉया पैर फिसल गया और उन्होंने उसका दॉया पैर पकड़ लिया।

विक्रम के बेटे ने अपने पिता की सहायता की और विक्रम ने उसकी दोनों ऑखों पर अपने ॲगूठे रख कर उसको अन्धा कर देने की धमकी दी।

पृथ्वीपाल बोला — "ठीक है तुमने मुझे हरा दिया तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बख्शता हूँ।"

यह सुन कर विक्रम गुस्से से मुस्कुराता हुआ बोला — "तुम पागल तो नहीं हो गये। तुम यह ज़िन्दगी की भीख किसको दे रहे हो? अगर मैं चाहता तो तुम्हें अभी मार भी सकता था।"

पृथ्वीपाल बोला — "ओ उज्जयिनी के राजा, इतना घमंड मत करो। मैं तो तुमको तुम्हारी मौत से ही बचाने आया हूँ। मैं तुमको एक कहानी सुनाता हूँ सुनो और फिर उसको सुन कर ही कुछ निश्चय करो। इससे तुम बिना किसी रोक टोक के पूरी धरती पर राज कर पाओगे और फिर शान्ति से मर सकोगे।"

और तब पृथ्वीपाल ने विक्रम को यह कहानी सुनायी।

"तीन आदमी एक ही राशि के एक ही चन्द्र नक्षत्र[39] में और एक ही समय में पैदा हुए।

तुम पहले आदमी थे जो एक राजघराने में पैदा हुए। दूसरा एक तेली के घर में पैदा हुआ। पर वह तीसरे आदमी के हाथ से मारा गया। वह तीसरा आदमी एक योगी है जो दुर्गा देवी को खुश करने के लिये सबको मार देता है।

उस योगी ने उस तेली के बेटे को मार कर मिमोसा के एक पेड़ से उलटा लटका दिया है और अब वह तुमको मारने का प्लान बना रहा है। उसने अपने बच्चे को भी मार दिया है।"

[39] Translated for the word "Sign". As you might be knowing that the Earth goes around the Sun and its path is divided into 12 Signs – Aries, Taurus, Gemimi etc…. Chandra Nakshatra means Lunar House or Constellation – they are 27 in number.

विक्रम ने आश्चर्य से पूछा — "पर वह तो योगी है उसके बच्चा कहाँ से आया?"

पृथ्वीपाल बोला — "वही तो मैं तुमको अब बताने जा रहा हूँ। जब तुम्हारे पिता गन्धर्वसेन ज़िन्दा थे तो उनके राज में एक बार उनके दरबारी लोग एक जंगल में आनन्द मना रहे थे कि उन्होंने जमीन में से एक सिर बाहर निकलता हुआ देखा।

उसके सारे शरीर पर सफेद चीटियाँ चिपकी हुई थीं और बहुत तरह के कीड़े मकोड़े उसके चेहरे पर रेंग रहे थे। उसके उलझे हुए बालों में बिच्छू घूम रहे थे। पर उस साधु के ऊपर उन सबका कोई असर नहीं था। वह केवल एक काँटे वाली झाड़ी का धुँआ सूँघ रहा था।

तुम्हारे पिता उस साधु को देख कर उससे बहुत प्रभावित हुए और बार बार उसकी तारीफ करने लगे।

वह उससे इतने ज़्यादा प्रभावित थे कि उन्होंने अपने दरबार में आ कर यह घोषणा की कि जो कोई भी उस साधु को उनके दरबार में लायेगा उसके 100 सोने के सिक्के इनाम में मिलेंगे।

उस शहर की वसन्तसेना नाम की एक वेश्या ने भी यह घोषणा सुनी। वह अपनी सुन्दरता और बोलने की होशियारी के लिये बहुत मशहूर थी। वह दरबार में आयी और उसने हाथ के एक कड़े के लिये उस साधु को और उसके बच्चे को उसी के कन्धे पर लाने का वायदा किया।

वसन्तसेना सीधी जंगल गयी तो उसने उस साधु को वहाँ प्यास गर्मी और ठंड से बेहोश पाया। उसने आग जला कर उसके लिये कुछ मीठा बनाया। उसने उसको उसके होठों से छुआया तो उसने उसको बड़े स्वाद से खाया।

उसने आँखें खोल कर देखा तो उसके सामने तो एक स्त्री खड़ी थी। उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?"

वसन्तसेना तुरन्त बोली — "मैं एक देवता की बेटी हूँ और अब इस जंगल में रहने आयी हूँ।"

योगी ने उसकी झोंपड़ी के बारे में पूछा और फिर उसके साथ रहने चला गया। वह उसको अपना घर दिखा कर बोली कि उसको यह सब उसकी तपस्या की वजह से मिला है। योगी उसके घर में एक मामूली आदमी की तरह से रहने लगा।

बाद में वसन्तसेना से उसने गन्धर्व रीति[40] से उससे शादी कर ली। समय आने पर उनके एक बच्चा भी हो गया।

एक दिन वसन्तसेना ने उससे तीर्थ यात्रा पर चलने के लिये कहा ताकि वह अपने किये पापों का प्रायश्चित कर सके। वह तैयार हो

---

[40] There are eight types of marriage ceremonies in Hindu religion. Gandharv system is one of them. Whatever marriage is performed with the free will of bride and groom, that is called Gandharv Vivaah. It is like the modern-day love marriage. Here the bride and the bridegroom may marry even secretly without the knowledge of their parents. It is not regarded to be a right kind of marriage as it is against the will of the parents so it is regarded an inferior kind of marriage. See the Web Site : http://www.sushmajee.com/reldictionary/dictionary/page-V-X/vivaah.htm

गया और वसन्तसेना के पीछे पीछे चल दिया। उस यात्रा में वे तुम्हारे पिता राजा गन्धर्वसेन के दरबार में भी आये।

वह बच्चा उस योगी के कन्धे पर बैठा था। लोगों ने वसन्तसेना को तुरन्त ही पहचान लिया और उससे बहुत सारे सवाल पूछे।

योगी उनकी सब बातें सुन रहा था। उसको पता चल गया कि उन लोगों ने उसके साथ यह सब उसके तप का फल नष्ट करने के लिये किया था। उसने उन सबको कोसते हुए अपने बच्चे को लिया और इसका बदला लेने के लिये फिर से तप करना शुरू कर दिया।

उसकी प्रार्थना सुन ली गयी तो सबसे पहले तो उसने तुम्हारे पिता को मारा। उसके बाद उसने तुम्हारे और तुम्हारे भाई के बीच दुश्मनी पैदा की और अब वह तुमको मारने का प्लान बना रहा है।

अब उसका प्लान यह है कि वह एक राजा और उसके बेटे को दुर्गा देवी को भेंट चढ़ायेगा। यह करके वह फिर सारी दुनियाँ के ऊपर राज कर पायेगा।

पर क्योंकि मैंने तुमको बचाने की कसम खायी है इसलिये अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। जो जंगल में रह रहा हो उस पर कभी विश्वास मत करना और जो भी तुमको मारने की कोशिश करे उसको तुम मार देना।”

अचानक पृथ्वीपाल चुप हो गया और वहाँ से गायब हो गया। और विक्रम और उसका बेटा अपने शहर में चले गये।

विक्रम की बेताल से मुलाकात

जब विक्रम अपनी जासूसी से लौट कर आया था तो वसन्त का मौसम चल रहा था। आने के बाद उसने अपने राज्य को बढ़ाने पर ध्यान दिया।

एक दिन ऐसा हुआ कि विक्रम अपने दरबार में बैठा हुआ था कि एक नौजवान व्यापारी मालदेव जो उज्जयिनी में नया नया आया था उसके दरबार में आया।

उसने राजा के हाथ में एक फल दिया। फिर उसने एक छोटा सा कालीन बिछाया उस पर बैठ कर **15** मिनट पूजा की और फिर वहाँ से चला गया।

जब वह वहाँ से चला गया तो विक्रम ने सोचा "हो सकता है कि यही वह आदमी हो जिसके बारे में वह बड़े साइज़ का आदमी बात कर रहा था।" यही सोच कर उसने वह फल नहीं खाया और उसको अपने घर की देखभाल करने वाले को सँभाल कर रखने के लिये दे दिया।

वह नौजवान व्यापारी रोज उसके दरबार में आता था और उसको वैसा ही एक फल रोज दे कर चला जाता था और राजा भी उस फल को अपने घर की देखभाल करने वाले को सँभाल कर रखने के लिये दे देता था।

एक दिन राजा अपनी घुड़साल देखने के लिये गया हुआ था कि उसी समय वह नौजवान व्यापारी उसके दरबार में आया पर विक्रम

के लोगों ने कहा कि राजा साहब अपनी घुड़साल में हैं तो वह उससे मिलने के लिये वहीं चला आया और फिर उसको वैसा ही फल दिया। विक्रम खेल खेल में उसको उछालने लगा।

उछालते उछालते इत्तफाक से वह फल नीचे गिर पड़ा। एक बन्दर उसको उठा कर ले गया और उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। उस फल में से एक लाल निकल पड़ा।

विक्रम उस लाल को देख कर आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछा — "तुमने मुझे इतना धन क्यों दिया?"

मालदेव बोला — "राजन यह हमारे धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि राजा, आध्यात्मिक गुरू, जज, नौजवान लड़कियाँ और वे बड़ी स्त्रियाँ जिनकी बेटी से हम शादी कर सकते हैं, इन सभी लोगों से मिलने खाली हाथ नहीं जाना चाहिये।

पर आप केवल एक ही लाल की बात क्यों कर रहे हैं। मैंने तो आपको बहुत सारे फल दिये हैं और उन सबमें एक एक लाल है।"

यह सुन कर विक्रम ने घर के रखवाले को पुराने सारे फल लाने के लिये कहा। जब वह सारे फल ले आया तो विक्रम ने सारे फल तोड़े तो उन सबमें एक एक लाल निकला। इतना सारा खजाना देख कर वह बहुत खुश हुआ।

उसने तुरन्त ही एक जौहरी[41] को बुलाया और उससे उनकी हर लाल की कीमत आँकने के लिये कहा। उसने कहा कि हर लाल की कीमत दस ट्रिलियन[42] सोने के टुकड़े थी।

यह सुन कर वह उस व्यापारी को अपने दरबार में ले गया और बोला — "मेरा तो सारा राज्य भी एक लाल के बराबर की कीमत का नहीं है। ठीक ठीक बताओ कि तुम ये क्यों खरीदते बेचते हो?"

मालदेव बोला — "मैं ये सारी बातें सबके सामने नहीं कर सकता। प्रार्थनाऐं, जादू, दवा, अच्छे गुण, घर के मामले, किसी मना किये गये फल को खाना, पड़ोसी की बुराई, ये सब मैं आपसे केवल अकेले में ही कह सुन सकता हूँ।"

सो विक्रम उसको अपनी एक निजी जगह ले गया और उससे पूछा — "तुमने मुझे इतने सारे लाल दिये और तुमने मेरे साथ एक दिन भी खाना नहीं खाया। बताओ तुमको क्या चाहिये।"

इस पर वह नौजवान बोला — "राजन मैं मालदेव नहीं हूँ। मैं शान्ता–शिल हूँ – एक भक्त। मुझे गोदावरी नदी के किनारे एक बड़े शमशान में कुछ जादू और जादुई संस्कार करने हैं। उसके बाद मुझे आठों सिद्धियाँ मिल जायेंगी।

---

[41] Translated for the word "Jeweler"

[42] Ten Trillion means 10,000,000,000,000 – means 1 with 13 zeros, or 10 to the power 12

मैं आपसे इस दान की भीख माँगता हूँ कि आप और आपका बेटा धर्मध्वज एक रात मेरे साथ वहाँ रहें। इससे मेरी पूजा पूरी हो जायेगी।"

विक्रम शमशान का नाम सुन कर चौंक गया पर फिर अपने आपको सँभाल कर उसने पूछा कि उसको वहाँ उसके साथ कब रहना है।

वह भक्त बोला — "आपको वहाँ अपने हथियार सहित आना है पर कोई और दूसरा आपके पीछे न आये। सोमवार की शाम को भादों की काली चौदस की रात को।"

राजा ने कहा "ठीक है।" और वह भक्त वहाँ से चला गया।

सोमवार आ पहुँचा और विक्रम अपनी चमकती हुई तलवार और अपने बेटे धर्मध्वज को साथ ले कर शमशान में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर उसको कई अपशकुन होने लगे।

जंगली जानवर चीख रहे थे और अपने अपने शिकारों पर लड़ रहे थे। भूत इधर से उधर घूम रहे थे। हड्डी के ढाँचे इधर उधर बिखरे पड़े थे। चुड़ैलें जमीन पर रेंग रही थीं। और इन सबके बीच शान्ता–शिल आग के पास बैठा हुआ था।

जब विक्रम उस भक्त के पास तक आया तो उसने देखा कि वह तो एक खोपड़ी और दो हड्डियों से कुछ कर रहा था।

हालाँकि उसको इस सबसे बहुत डर लग रहा था पर वह अपने परिवार पर पड़ा यह शाप हमेशा के लिये हटा देना चाहता था।

वह उस भक्त आदमी को किसी भी समय मार सकता था पर वह अपना वायदा भी पूरा करना चाहता था। इसके अलावा उसके काम का समय तो अभी आने वाला था।

विक्रम ने पूछा — "बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ।"

भक्त बोला — "बस तुम्हें वह लाश लानी है जो मिमोसा के पेड़ से लटक रही है। वह पेड़ दक्षिण दिशा में यहाँ से दो कोस दूर है।"

विक्रम अपने बेटे को वहाँ उस आदमी के साथ अकेला छोड़ना नहीं चाहता था सो उसने अपने बेटे का हाथ पकड़ा और दक्षिण दिशा की तरफ चल दिया। अब उसको पक्का विश्वास हो गया था कि यही वह आदमी था जो उसको मारना चाहता था।

बारिश शुरू हो गयी थी और अँधेरा बढ़ रहा था। जैसे जैसे समय आगे बढ़ रहा था जंगल में से गुजरना मुश्किल होता जा रहा था। आखिर वह उस जगह आ ही पहुँचा जहाँ मिमोसा का वह पेड़ था जिससे वह लाश लटक रही थी। उसने देखा कि उस पेड़ की हर शाख और पत्ती में आग लगी हुई थी।

जैसे ही वह उस पेड़ के पास पहुँचा उसको कई आवाजें सुनायी दीं "पकड़ लो इनको। मार दो इनको। जाने मत देना।" उसको लगा कि वह आग उनको जला रही थी।

वह सुस्ताने के लिये वहीं पेड़ के नीचे बैठ गया। उसने देखा कि उस पेड़ से एक लाश टँगी हुई थी। लाश की आँखें बिल्कुल खुली हुई थीं और वह अपनी पलक भी नहीं झपका रही थीं। उसने

उस लाश को छुआ तो वह तो बर्फ की तरह बिल्कुल ठंडी पड़ी थी।

इसी से उसको पता चल गया कि यही वह बेताल था जिसको उसे उस भक्त के पास ले कर जाना था।। उसको यह भी लगा कि वह उस तेली का बेटा ही होगा जैसा कि उस बड़े साइज़ के आदमी ने उसे बताया था।

राजा निडर हो कर पेड़ पर चढ़ गया और एक ही झटके में उसने उस शरीर को नीचे गिरा दिया। आश्चर्य, शरीर दर्द से चिल्लाया तो विक्रम को उसकी आवाज सुन कर बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा कि चलो यह शैतान कम से कम ज़िन्दा तो है।

उसने उसको अपने हाथ में पकड़ा और पूछा — "तुम कौन हो?"

वह शरीर उसके हाथ से फिसल गया और फिसल कर बहुत ज़ोर से हॅसा और पेड़ की एक और शाख से जा कर लटक गया। विक्रम फिर पेड़ पर चढ़ गया और उसको फिर से गिरा दिया और अपने बेटे को उसे तुरन्त ही पकड़ने को कहा। उसके बेटे ने तुरन्त ही उसे पकड़ लिया।

पर जैसे ही राजा पेड़ से नीचे उतरा और उसे पकड़ा वह फिर उसके हाथ से फिसल कर पेड़ की दूसरी शाख से लटक गया। दोबारा उसके हाथ से फिसल कर पेड़ पर लटक जाने पर विक्रम बहुत गुस्सा हुआ।

बेताल ने ज़ोर से हॅसते हुए पूछा — "तुम हो कौन?"

विक्रम ने ऐसा पॉच बार किया पर सातवीं बार बेताल उसके हाथ से छूट कर नहीं भागा। उसने अपने आपको विक्रम के हाथ में पकड़े जाने दिया।

उसने ज़ोर से हॅसते हुए विक्रम से फिर पूछा — "तुम हो कौन?"

विक्रम बोला — "मैं विक्रम हूॅ उज्जयिनी का राजा। और मैं तुमको एक ऐसे आदमी के पास ले जा रहा हूॅ जो एक खोपड़ी और दो हड्डियों से कुछ कर रहा है।"

बेताल बोला — "मैं तुम्हारे साथ जाने के लिये तैयार हूॅ। पर जहॉ तुम मुझको ले जाना चाह रहे हो वह जगह यहॉ से एक घंटा दूर है। मैं चाहूॅगा कि मैं अपना ध्यान बॅटाने के लिये तुमको कहानी सुनाऊॅ।

साधु और विद्वान लोग अपना समय कहानी सुना कर ही बिताया करते हैं जबकि बेवकूफ लोग अपना समय सोने और आलस में रह कर गुजारते हैं।

कहानी सुना कर मैं तुमसे उस कहानी के ऊपर कई सवाल पूछॅूगा जो भी मुझे अच्छे लगेंगे। अगर तुमने जानबूझ कर उन सवालों के जवाब नहीं दिये तो तुम्हारे सिर के हजारों टुकड़े हो जायेंगे और अगर तुम बोले तो मैं तुमको रास्ते में ही छोड़ कर अपनी जगह वापस भाग जाऊॅगा।

और अगर तुम किसी वजह से जवाब न दे पाने की वजह से या फिर नम्रता की वजह से या फिर जवाब न मालूम होने की वजह से चुप रहे तभी मैं अपनी मरजी से तुमको अपने आपको उस योगी के पास ले जाने दूँगा।"

अब विक्रम तो राजा था वह तो ऐसे शब्द सुनने का आदी नहीं था सो उसने इधर उधर देखा और यह देख कर खुश हुआ कि उसका बेटा वहाँ पास में नहीं था और उसने यह सब नहीं सुना था वरना वह पता नहीं उसके बारे में जाने क्या सोचता।

तब विक्रम ने उसको आसानी से ले जाने के लिये अपने कमर के कपड़े से उठा कर अपने कन्धे पर रखा और शमशान चल दिया।

बारिश रुक गयी थी मौसम साफ हो गया था। जैसा कि बेताल ने कहा था तो पहले तो उसने हवा बारिश कीचड़ आदि के बारे में बात करना शुरू कर दिया। पर विक्रम ने उसकी किसी भी बात का कोई जवाब नहीं दिया।

इससे बेताल को बहुत परेशानी हुई। सो वह बोला — "विक्रम अब मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। इसको ध्यान दे कर सुनना।"[43]

[43] Up to here this story has been taken from Captain Sir Richard Burton's book "Vikram and the Vampire: classic Hindu tales of adventure, magic and romance". It is available at the Web Site : https://www.gutenberg.org/files/2400/2400-h/2400-h.htm / edited by his wife Isabel Burton. This book gives only 11 stories including the last one and cotains 450 pages. This book was published in 1870,

और इसके बाद उसकी कहानियाँ शुरू हो जाती हैं। वह कुल **25** कहानी सुनाता है और हर कहानी के बाद उससे इस शर्त पर सवाल पूछता है कि अगर जानते बूझते विक्रम ने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया तो उसका सिर हजारों टुकड़ों में टूट जायेगा।

और यह विक्रम को मालूम था कि वह अगर बोला तो वह बेताल उसके हाथ से छूट कर फिर वापस अपनी जगह चला जायेगा।

अब क्योंकि वह सवालों के जवाब जानता था सो वह चुप रह कर तो अपना सिर नहीं तुड़वा सकता था इसलिये उसको उसके सवालों के जवाब देने ही पड़ते थे।

और यह भी जाहिर है कि उसके बोलते ही वह बेताल फिर से अपने उसी पेड़ पर जा कर उलटा लटक जाता था सो उसको उसे फिर से लाने के लिये विक्रम को वहाँ फिर से जाना पड़ता था।

इस तरह से वह **24** बार उस बेताल को लाने के लिये उस पेड़ तक गया। पर **25**वीं कहानी का जवाब वह नहीं जानता था और उसने यह बेताल से कह दिया तो बेताल ने उसको अपने आपको उस योगी के पास ले जाने दिया।

इसी समय बेताल ने उसको यह भी बताया कि वह योगी उसको मारना चाहता था और वह उस योगी के चंगुल से कैसे छूट सकता था। **25**वीं कहानी सुनाने के बाद बेताल ने विक्रम से कहा कि जब

तुम्हारी बलि दी जाये तो एक लकड़ी पर बैठ कर थोड़ा आराम करना तभी तुम उस योगी से छुटकारा पा सकते हो।

विक्रम ने वैसा ही किया जैसा कि बेताल ने उससे करने को कहा था और वह उस योगी के चंगुल से छूट गया। बेताल ने फिर विक्रम को वर दिया और विक्रम उसको ले कर उस योगी के पास चला गया।

कहते हैं कि जहाँ ये कहानियाँ कही सुनी जाती है वहाँ भूत चुड़ैलें नहीं आते इसी लिये भी इनका नाम विक्रम बेताल की कहानियाँ हैं, और इसी लिये ये बहुत लोकप्रिय भी हैं और लोग इनको कहते सुनते हैं।

तो यह थी विक्रम बेताल की कहानियों के शुरूआत की कहानी बृहत् कथा के अनुसार।

विक्रम बेताल की कहानियाँ भविष्य पुराण में

भविष्य पुराण में विक्रम बेताल की नौ कहानियाँ दी हुई हैं उनका सुनाने वाला अलग है। उनका माहौल भी अलग है। उनको सुनाते समय कोई शर्त भी नहीं है। पर हाँ केवल कहानियाँ वैसी ही पहेली भरी हैं जैसी इस बृहत् कथा में दी हुई हैं साथ में सुनाने वाला उनके ऊपर एक सवाल भी पूछता है। वह कैसी हैं इसको जानने के लिये तुम्हें यह पुस्तक पढ़नी पढ़ेगी।[44]

[44] "Vikram Aur Betaal Ki Kahaniyan: Puraan Se", by Sushma Gupta in Hindi language.

कहा जाता है कि राजा विक्रम का सिंहासन भगवान शिव ने खुद बना कर भेजा था। जब राजा विक्रम उस सिंहासन पर बैठे तो भगवान शिव ने अपने एक देवता बेताल को उनके पास भेजा।

वह उनके दरबार में आया और बोला "आपकी जय हो। अगर आपकी इजाज़त हो तो मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ..."

और फिर उसने राजा विक्रमदित्य को एक के बाद एक नौ कथाऐं सुनायीं। हर कथा सुनाने के बाद उस कथा पर एक सवाल पूछा जिसका राजा ने अपनी समझ से ठीक जवाब दिया।

आखीर में बेताल ने कहा "हे राजन। मैं आपके पास भगवान शिव की आज्ञा से आया था। कई तरह के सवाल पूछ कर मैंने आपका काफी इम्तिहान ले लिया है। आपने मेरे सब सवालों का जवाब बड़ी अक्लमन्दी से दिया है।

मैं आपसे बहुत खुश हूँ। मैं आपकी बाँहों में रहूँगा ताकि आप धरती के अपने सारे दुश्मनों को आसानी से जीत सकें। हमारे गुलामों ने धरती की बहुत सारी जगहों को नष्ट कर दिया है तो आप वहाँ शास्त्रों के बताये अनुसार शहर बसायें और न्याय से राज्य करें।" यह कह कर उसने उनसे कहा कि अब वे देवी की पूजा करें और गायब हो गया।

उसके बाद विक्रमदित्य ने अश्वमेध यज्ञ किया और चक्रवर्ती राजा बन गये। तो इसमें देखा जाये तो इन कथाओं के कहने का

कोई खास मतलब नहीं है। ऐसा लगता है कि भगवान शिव ने बेताल को विक्रम का केवल इम्तिहान लेने के लिये भेजा था।

पर इन कथाओं का क्योंकि एक संग्रह इस पुराण में दिया हुआ है इसलिये इसका यहाँ जिक्र करना ठीक समझा गया।

8 सूर्य शतक चंडी शतक और भक्तिमार स्तोत्र[45]

क्योंकि ये तीनों पुस्तकें एक दूसरे सम्बन्धित हैं इसलिये हम इन तीनों के जन्म के कारण एक साथ ही दे रहे हैं। इन तीनों के लिखने वाले क्रमशः मयूरभट्ट, बाणभट्ट और एक जैन लेखक मानतुन्गा सूरी हैं।

बाणभट्ट **570–630** एडी के एक बहुत बड़े कवि हो गये हैं। इनके जीवन का कुछ हाल मानतुन्गा सूरी के "भक्तिमार सूत्र" की दो जैन टीकाओं से मिलता है। बाणभट्ट की लिखी हुई दो पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हैं – कादम्बरी और हर्षचरित।

ये मयूर भट्ट के समकालीन थे। मयूर भट्ट इनके ससुर थे। मयूरभट्ट की बेटी का विवाह बाणभट्ट से हुआ था। मयूरभट्ट भी उस समय के बहुत बड़े कवि थे उनका लिखा हुआ सूर्यशतक बहुत प्रसिद्ध है।

इन तीनों पुस्तकों का एक के बाद एक लिखा जाना एक संयोग और एक प्रतियोगिता है। यह एक बड़ी मजेदार घटना है। पहले दोनों कवियों ने अपने अपने इष्टदेव के लिये एक एक शतक[46] लिखा और बुराइयों से छुटकारा पाया। मानतुन्गा सूरी एक जैन लेखक थे उन्होंने केवल **44** पद लिख कर उससे अपनी परेशानी दूर करके दिखायी।

---

[45] Baanbhatt. 570-630 AD. Taken from Indian Antiquary. Vol I. 1872. p 112-. https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.44339/page/n122/mode/1up

[46] Hundred verses make a "Shatak" – Shatak means hundred.

एक बार मयूर भट्ट को अचानक कोढ़ हो गया तो भगवान सूर्य की पूजा करने से उनका यह रोग ठीक हो गया। भगवान सूर्य को प्रसन्न करने के लिये उन्होंने सूर्य शतक लिखा था।

बाणभट्ट को इस बात से बहुत जलन हुई और इस जलन की वजह से मयूर भट्ट ने अपने हाथ और पैर दोनों काट डाले और फिर अपनी इष्ट देवी चंडिका की प्रशंसा में "चंडी शतक" लिखा जिससे उनके हाथ पैर दोनों वापस आ गये।

इन दोनों पुस्तकों के बारे में यहाँ लिखना हमारा उद्देश्य नहीं है इसलिये इन पुस्तकों के बारे में हम यहाँ नहीं लिखेंगे। ये तो अपने आप में ही साहित्य की उच्चतम कृतियों में गिनी जाती हैं।

हम यहाँ उस कथा के बारे में लिखेंगे जिसकी वजह से ये दोनों शतक और यह भक्तामार स्तोत्र लिखा गया और जितना हिस्सा उसके लिखने का बाणभट्ट और मयूरभट्ट से सम्बन्धित है। और यह कथा एक जैन टीका से ली गयी है।[47]

यह बहुत पुरानी बात है कि अमरावती उज्जयिनी में मयूर नाम के एक पंडित रहा करते थे। उन्होंने शास्त्रों का बहुत अच्छा अध्ययन करके अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने राजा भोज से सम्मान भी पाया। उनके एक बेटी थी जिसकी शादी उन्होंने एक सुयोग्य वर बाणभट्ट से कर दी थी।

[47] Although the name of this commentator's name is not given, it is very probable that he lived in the beginning of the 15th century because he gives the name of Sritilak Suri, predecessor of reigning Pattdhari Gunachandra in the Vanshavali in the end of the book. Sritilak of the Abhayadev Vansh was the teacher of Rajshekhar who wrote the Prabandh Kosh in 1317.

दोनों ही राजा भोज के दरबारी कवि थे। इतना घनिष्ट सम्बन्ध होते हुए भी दोनों एक दूसरे से जलते बहुत थे। क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि "गधे बैल घोड़े जुआरी पंडित और दुष्ट एक साथ बैठ भी नहीं सकते और बिना एक दूसरे के रह भी नहीं सकते।"

एक दिन जब वे दोनों आपस में लड़ रहे थे तो राजा भोज ने उनसे कहा कि तुम लोग दोनों काश्मीर जाओ। वहाँ भारती रहती है। वह जिसे ज़्यादा अच्छा कवि कह देंगी वही ज़्यादा अच्छा कवि होगा।[48]

सो उन दोनों ने रास्ते के लिये अपना अपना खाना लिया और काश्मीर चल दिये। जब वे माधुमतस यानी काश्मीर देश को जाने की सड़क पर आये तो वहाँ उन्होंने **500** बैल देखे जो अपने ऊपर बोझा उठाये जा रहे थे।

उनको देख कर उन्होंने अपने ड्राइवरों से पूछा — "तुम्हें वहाँ क्या दिखायी दे रहा है।"

ड्राइवर बोला — "ओम" शब्द पर टीका।"

उन्होंने फिर से उस तरफ देखा तो देखा कि वहाँ तो **500** नहीं बल्कि **2000** बैल थे। यह पता चलने के बाद कि वे ओम शब्द के बारे में कोई नयी टीका ले कर जा रहे हैं उनका घमंड टूट गया।

रात हो गयी थी सो वे दोनों एक साथ कहीं सो गये।

[48] A journey to Kashmir and a presentation of books to Bharati (Devi Saraswati – goddess of Knowledge) is frequently mentioned as a test for poets by the Jain authors.

रात को सरस्वती जी ने मयूर को जगाया और उसे एक कविता के विषय की यह लाइन दी "आकाश सौ चन्द्रमाओं से भर गया।"

वह खुद ही आधा उठा और उसने इसका यह हल दिया – "चाणूरमल्ल दामोदर के हाथ से एक थप्पड़ खा कर इतना आश्चर्यचकित रह गया कि उसने देखा कि आकाश सौ चन्द्रमाओं से भर गया है।"

यही सवाल बाण से पूछा गया तो वह कुछ गुर्राया और उसने इसका यह जवाब दिया – "उस रात बहुत सारे कमल से चेहरे छत पर घूमने की वजह से ऐसा लग रहा था जैसे आकाश सौ चन्द्रमाओं से भर गया हो।"

सरस्वती देवी ने कहा — "तुम दोनों बड़े कवि हो और शास्त्र अच्छी तरह जानते हो पर बाण निम्न स्तर का कवि है क्योंकि वह गुर्रा कर बोला। मैंने तुम लोगों को ओम शब्द पर लिखी हुई वे टीकाऐं इसलिये दिखायीं कि ऐसा कौन हे जिसे विद्या की देवी के ज्ञान कोष का पूरा ज्ञान हो।

यह भी कहा गया है कि किसी को यह कह कर घमंड नहीं करना चाहिये कि "इस समय का केवल मैं ही एक पंडित हूॅ। दूसरे तो अज्ञानी हैं। यह अहं है। बुद्धिमत्ता की महानता तो तुलना करने से ही पता चलती है।"

इस तरह सरस्वती जी ने दोनों में सुलह करवायी। जब वे लोग उज्जयिनी के बाहरी परकोटे के पास आये तो वे दोनों अपने अपने घर चले गये। अगले दिन वे राजा के दरबार में गये।

यह भी कहा गया है कि हिरनों का हिरन से गायों का गाय से घोड़ों का घोड़े से बेवकूफों का बेवकूफ से अक्लमन्दों का अक्लमन्द से – यानी लोगों की दोस्ती गुण या दोष के एकसेपन पर ही आधारित होती है।

एक बार की बात है कि बाण की अपनी पत्नी से आपस में कुछ प्यार की खटपट हो गयी। पत्नी को थोड़ा घमंड था वह अपने घमंड को नहीं हटा पा रही थी। इस तरह काफी रात निकल गयी।

उधर उस रात मयूर ने अपनी एक नयी कविता लिखी थी वह उसे बाण को सुनाने के लिये बहुत बेचैन था। सो जैसे ही सुबह हुई वह उसे बाण को सुनाने के लिये चल दिया।

क्योंकि अभी सुबह भी पूरी तरह से नहीं हुई थी तो वह बाण के सोने वाले कमरे की खिड़की के पास खड़ा हो कर थोड़ा और समय गुजर जाने का इन्तजार करने लगा कि जब पूरी तरह सुबह हो जायेगी मैं तब घर के अन्दर जाऊँगा।

तभी उसे पति पत्नी के लड़ने झगड़ने की आवाज आयी। बाण अपनी पत्नी के पैरों पर गिरा हुआ था और उससे कह रहा था — "ओ मेरी वफादार। मेरी उस एक गलती को माफ कर दो। अब मैं तुम्हारे ऊपर कभी गुस्सा नहीं करूँगा।"

पत्नी ने अपने पैर से उसे एक ठोकर मारी। ठोकर मारने से उसके पैर में पड़ी पायल बज उठी। मयूर जो उनकी खिड़की के नीचे खड़ा था उसके पैर की पायल की आवाज सुन कर बहुत दुखी हुआ क्योंकि उसकी बेटी ने अपने पति का अपमान किया था।

पर बाण चुप नहीं रह सका उसने तभी एक नया पद पढ़ा — "ओ पतली कमर वाली। अब रात करीब करीब बीत गयी है खरगोश की तरह से बच कर निकल गयी है। यह दिया भी अपनी लौ झुका कर उनींदा लग रहा है।

ओ सुन्दर भौंहों वाली। तुम्हारा तो दिल भी तुम्हारे स्तनों के साथ रहते रहते पत्थर हो गया है इसलिये मुझे दुख है कि तुम मेरे अपने पैरों में गिरने के बावजूद अपने घमंड को भूल नहीं पा रहीं।"

यह सुन कर मयूर से रहा नहीं गया वह वहीं से बोला — "तुम उसे सुन्दर भौहों वाली मत कहो वह तो चन्डी है चन्डी क्योंकि इस समय वह बहुत गुस्सा है।"

अपने पिता की यह कठोर वाणी सुन कर बेटी ने अपने पिता को जिसने उसका चरित्र उजागर कर दिया था शाप दिया — "भगवान करे आप उस पान के रस के छूने से कोढ़ी हो जायें जो मेरे मुँह में है।"

कह कर उसने अपने मुँह में रखा पान बाहर थूक दिया। उसी पल से मयूर के शरीर पर कोढ़ के निशान प्रगट होने शुरू हो गये।

सुबह होने पर बाण राज दरबार पहुँचा और मयूर के बारे में पूछा पर तभी मयूर भी वहाँ आ गया उसने आते ही एक व्यंग्य पढ़ा — "वरकोढ़ी आ गया।"

राजा उसका व्यंग्य समझ गया और मयूर के शरीर पर कोढ़ के निशान देख कर उसे वापस भेज दिया कि "तुम्हें यहाँ से जाना चाहिये।"

मयूर वहाँ से चला गया और एक सूर्य देव के मन्दिर में जा कर बैठ गया और अपने इष्टदेव में अपना ध्यान लगा लिया। वहाँ बैठ कर उसने सूर्य शतक लिखा। कहते हैं कि जब उसने अपने शतक का छठा पद लिखा तभी उसके भगवान सूर्य उसके सामने प्रगट हो गये थे।

मयूर ने उन्हें सिर झुकाया और कहा कि "हे भगवान मुझे इस कोढ़ से ठीक कर दो।

सूर्य भगवान बोले — "दोस्त। मैं भी अभी तक अपने पैरों के ऊपर कोढ़ का प्रभाव सह रहा हूँ जो मुझे एक शाप के कारण मिला है। मैंने रन्नादेवी[49] को जो एक घोड़ी के रूप में थी उसकी बिना इच्छा के उससे प्यार किया। पर कोई बात नहीं मैं एक पतिव्रता पत्नी शाप द्वारा दिया गया तुम्हारा यह कोढ़ अपनी एक किरन से ठीक कर दूँगा।"

---

[49] This Ranna Devi may be Soorya's own wife Sangyaa who left her husband because his excessive brightness to perform Tap to be able to tolerate it. In th meantime she kept her shadow named "Chhaayaa" to serve her husband.

ऐसा कह कर आकाश के रत्न वहॉ से चले गये। सूर्यदेव की एक किरन ने जिसने मयूर को अपने घेरे में ले लिया था मयूर का कोढ़ ठीक कर दिया। यह देख कर लोग बहुत खुश हुए। राजा ने भी उसे सम्मान दिया।

बाण तो यह देख कर बिल्कुल ही जल भुन गया। उसने अपने दोनों हाथ और पैर काट डाले। अपने दिमाग में यह पक्का वायदा करके कि वह भी कुछ ऐसा ही करके दिखायेगा। उसने **100** पद लिख कर चन्डिका की प्रशंसा की। जैसे ही उसने अपने पहले पद का छठा अक्षर बोला चंडिका जी उसके सामने प्रगट हुई और उसके चारों हाथ पैर ठीक कर दिये।"

शेष बची हुई कथा के अनुसार जैन लोग जो यह दिखाना चाहते थे कि उनके महावीर जी भी ऐसा चमत्कार कर सकते हैं अपना नाम ऊॅचा करने के लिये मानतुंग सूरी को राज सभा में ले कर आये। इस योग्य आदमी ने अपने आपको **42** लोहे की जंजीरों में बॅधवा कर अपने आपको एक घर में बन्द करवा लिया।

इसके बाद उसने "भक्तिमार स्तोत्र" के **44** पद लिखे और अपने आपको उन जंजीरों से मुक्त किया। कहते हैं कि उसके हर पद पर उसकी एक जंजीर टूटती जाती थी।

यह चमत्कार दिखा कर उसने राजा भोज को जैन धर्म स्वीकार करवा लिया था। यहॉ एक और बात जोड़ी जा सकती है कि कुछ जैनियों के अनुसार मानतुन्गा सूरी तीसरी शताब्दी के आरम्भ में था।

और यह हमें मालूम है कि मयूरभट्ट और बाणभट्ट दोनों चार शताब्दी बाद हुए।

9 बृहत् कथा[50]

बृहत् कथा लोक कथाओं का एक और संग्रह है। इसकी शुरूआत हिन्दू धर्म के पुराणों से हुई है। तो लो पढ़ो इस संग्रह की शुरूआत की कहानी।

एक बार पार्वती जी ने अपनी सेवाओं से शिव जी को प्रसन्न किया तो शिव जी ने उनसे कोई वर माँगने के लिये कहा। पार्वती जी ने कहा कि वह उन्हीं के मुँह से कोई ऐसी कहानी सुनना चाहती हैं जो पहले कभी किसी ने न तो उनसे और न ही किसी और से कही हो।

शिव जी बोले "ठीक है" सो उन्होंने अपने सब नौकरों को वहाँ से चले जाने के लिये कहा। वह पार्वती जी को देवताओं की खुशी, मनुष्यों के दुख और धरती और स्वर्ग की आत्माओं की हालतों के बारे में बताना चाहते थे। उस समय उन्होंने पार्वती जी को विद्याधरों के सात बादशाहों की कहानियाँ सुनायीं।

इतने में शिव जी का पुष्पदंत[51] नाम का एक गण शिव जी से मिलने आया तो शिव जी के द्वारपाल ने उसको अन्दर जाने से रोक दिया।

---

[50] Brihatkathaa has a mythological origin. This writeup has been taken from the Web Sites : http://www.worldlibrary.org/articles/eng/brihatkatha and https://en.wikipedia.org/wiki/Gunadhyay

[51] Pushpadant – name of one Gan of Shiv Jee

पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था सो उसको उत्सुकता हुई कि आज ऐसा क्यों हुआ कि उसको शिव जी से मिलने से मना कर दिया गया सो वह अपने आपको अदृश्य करके शिव जी के महल में घुस गया।

वहाँ उसने अदृश्य रह कर जो कुछ शिव जी ने पार्वती जी से कहा वह सब सुना और फिर अदृश्य रह कर ही वह वहाँ से बाहर निकल आया।

वहाँ से वह अपने घर आया और अपनी पत्नी जया को वह सब बताया जो शिव जी ने पार्वती जी से कहा था। जया पार्वती जी की बहुत अच्छी दोस्त थी। जया इस बात को छिपा न सकी और उसने यह सब जा कर पार्वती जी को बताया।

पार्वती जी इस बात पर बहुत नाराज हुईं और उन्होंने पुष्पदंत को धरती पर आदमी के रूप में पैदा होने का शाप दे दिया।

पुष्पदंत का एक दोस्त था माल्यवान। जब उसने पुष्पदंत की सहायता करनी चाही तो उसको भी धरती पर आदमी के रूप में पैदा होने का शाप मिला।

पुष्पदंत कौशाम्बी में वररुचि[52] बन कर पैदा हुआ। कुछ समय बाद एक पिशाच उसके सामने प्रगट हुआ और उसको उसके पहले

[52] Vararuchi is the name of Pushpdant after he was born in Kaushaambee, or Kaatyaayan the Minister of the King Nand. Vararuchi was supposed to tell these Shiv's stories to humans.

जन्म की याद दिलायी और उसने उसके सामने शिव जी की सुनायी हुई सात कहानियाँ कहीं जिनमें हर एक में **700** हजार श्लोक थे।

पुष्पदंत शिव जी का बहुत बड़ा भक्त था सो उसने उन सब कहानियों को लिख लिया। इस काम में उसको बहुत साल लग गये पर वह सब उसको इतना अच्छा लगा कि वह शिव जी के मन्दिर में जा कर उनको शिव जी को सुनाने चला गया।

पर शिव जी उसके इस काम से बहुत नाखुश थे सो उन्होंने उसको उस काम को नन्दी के मुँह में फेंक देने के लिये कहा। पुष्पदंत को यह अच्छा नहीं लगा पर उसे शिव जी की बात तो माननी ही थी।

पर आश्चर्य। जब वह अपने उस काम को नन्दी के मुँह में फेंकने गया तो उसने देखा कि उसका हर श्लोक तो नन्दी के दाँत पर लिखा हुआ है। तब शिव जी ने उसको बताया कि वे श्लोक तो बहुत पहले से लिखे हुए थे वह तो केवल एक साधन था।

तब पुष्पदंत यानी वररुचि को उस कहानी को एक पिशाच कणभूति[53] को एक जंगल में सुनाने को कहा गया कि उसके बाद ही कहीं जा कर उसको अपने शाप से छुटकारा मिलेगा।

इस बीच माल्यवान को भी शाप से तभी छूटना था जब वह वह कहानी उस पिशाच कणभूति से सुन लेता और उस कहानी को संसार

---

[53] Kanabhooti is the name of a Pishaach to whom Pushpdant had to tell the story he had heard while Shiv Jee was telling them to Paarvatee Jee. Kanabhooti was a Yaksh named Suprteaek who was cursed by his master Kuber independently and lived in Vindhyaachal forests. He tells the story in Paishaachi language.

को सुना देता। सो माल्यवान प्रतिष्ठान पुरी में रह रही एक कुँआरी ब्राह्मण लड़की से जन्म लेता है और वहाँ उसका नाम गुणाध्य होता है।[54]

बड़ा होने पर गुणाध्य प्रतिष्ठान पुरी के राजा शालिवाहन या सातवाहन का एक मन्त्री[55] बन जाता है। वह विन्ध्याचल के जंगलों में कणभूति पिशाच से कहानी लेने के लिये जाता है। वहाँ कणभूति वे कहानियाँ पैशाची भाषा में गुणाध्य को सुनाता है और गुणाध्य उनको पैशाची भाषा में ही अपने खून से लिखता है।[56]

पर जब वह उस कहानी को ले कर राजा सातवाहन के पास जाता है तो राजा उस कहानी को मानने से इनकार कर देता है क्योंकि वह पैशाची भाषा में लिखी हुई थी सो वह फिर से जंगल लौट जाता है और वहाँ जा कर उन पन्नों को आग में जलाने का प्लान बनाता है।

कथा सरित् सागर के एक रूप[57] में लिखा है कि जब गुणाध्य उन पन्नों को जलाने के लिये आग जलाता है तो वह अपने लिखे हुए उन पन्नों को पहले तो पढ़ना शुरू करता है और फिर एक एक

---

[54] Maalyavaan is reborn as Gunaadhya to a maiden Braahman girl in Supratishthit. Gunaadhya is the Sanskrit name of the 6th century Indian author of Brihatkathaa – a large collection of tales.

[55] Gunaadhya is appointed as Minister to the King Saatvaahan of Pratishthaan Puree (modern day Paithaan in Mahaaraashtra). Saatvaahan Dynasty is dated in India's Deccan region from 271 BC to 71 BC. Saatvaahans were the Kings during 1st century BC to 3rd century AD.

Gunaadhya has described the valor of King Vikramaaditya whose qualities have been described by a Saatvaahan King Haalvaahan in his "Gathaa Satsai". Both Gunaadhya and Shaalvaahan lived around Vikramaaditya times.

[56] Perhaps that is why this book is found written in Paishaachee languge

[57] Translated for the word "Version"

करके उनको आग में जलाता रहता है तो वहाँ रह रहे जानवर उस कहानी को सुन कर उससे इतने आकर्षित हो जाते हैं कि वे गुणाध्य के पास आ कर बैठ जाते हैं और चुपचाप उसकी कहानियों को सुनते रहते हैं।

अब क्योंकि जंगल के सारे जानवर गुणाध्याय की कहानी सुनते रहते हैं तो राजा सातवाहन के रसोइये को राजा की रसोई के लिये अच्छा माँस नहीं मिलता। राजा सातवाहन इसका कारण खोजने के लिये खुद जंगल शिकार के लिये जाता है।

इत्तफाक से राजा सातवाहन भी उस समय शिकार के लिये उसी जंगल में जाता है जहाँ गुणाध्य कहानियाँ पढ़ पढ़ कर उमके पन्ने आग में जला रहा है।

पर वहाँ उसको शिकार के लिये कोई जानवर ही नहीं मिलता क्योंकि सारे जानवर तो गुणाध्याय के पास बैठे हुए उसकी कहानी सुन रहे होते हैं। पर वह खुद एक मीठी सी आवाज सुन कर उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है।

जब वह उस आवाज तक पहुँचता है तो क्या देखता है कि वहाँ तो जंगल के बहुत सारे जानवर गुणाध्य के चारों तरफ बैठे हैं और गुणाध्याय अपने खून से लिखी हुई उसी कहानी का एक एक पन्ना करके पढ़ रहा है और पढ़ा हुआ पन्ना आग में डालता जा रहा है जिसको वह उसके पास लाया था।

जब तक सातवाहन वहाँ पहुँचता है गुणाध्य छह कहानियाँ तो खत्म कर लेता है और उनको जला भी देता है पर अभी उसकी सातवीं कहानी बच जाती है।

किसी तरह से वह गुणाध्य को उस पुस्तक की सातवीं कहानी आग में डालने से रोक लेता है पर उससे पहले की छह कहानियाँ तो पहले ही जल चुकी थीं।

इस प्रकार केवल यह सातवीं कहानी ही बच पाती है और वह सातवीं कहानी बृहत् कथा थी जिससे सारी और कहानियाँ, जैसे कथा सरित् सागर, ली गयीं हैं। ये आखिरी **700** हजार श्लोक लिखे **100** हजार पन्ने थे जो सातवाहन ने बचाये। ऐसा कथा सरित् सागर में लिखा हुआ है।

तो यह है बृहत् कथा के जन्म की कहानी।

विकीपीडिया से[58]

बृहत् कथा में दो राज्य हैं उज्जयिनी और कौशाम्बी

उज्जयिनी के राजा रानी हैं प्रद्योत महासेन और अंगारवती
कौशाम्बी के राजा रानी हैं शतानीक और मृगावती
प्रद्योत और अंगारवती के दो बेटे गोपाल और पालक और एक बेटी वासवदत्ता
शतानीक का एक बेटा उदयन
उदयन की दो पत्नियाँ वासवदत्ता और पद्मावती
उदयन और वासवदत्ता का एक बेटा नरवाहनदत्ता

[58] Brihat Katha – From https://en.wikipedia.org/wiki/Brihatkatha

उदयन के **4** मन्त्री – रुमनवान, यौगन्धरायन, ऋषभ और वसन्तक
नरवाहनदत्ता के **4** मन्त्री – हरिशिखा, मारुभूतिका, गोमुख और तपन्तक

गुणाध्य की बृहत् कथा **200–500** एडी में पैशाची भाषा में गद्य में लिखी गयी
गुणाध्य इसे अपने राजा सातवाहन के पास ले जाता है
पर वह उसको पैशाची भाषा के कारण स्वीकार नहीं करता
सो वह उसको जंगल ले जाता है और वहॉ उसका एक एक पन्ना पढ़ कर जलाता रहता है
जंगल के जानवर उन कहानियों को सुनते रहते हैं
उसी समय सातवाहन शिकार के लिये जाता है पर उसको कोई शिकार नहीं मिलता
क्योंकि सारे जानवर तो गुणाध्य की कही कहानियॉ सुन रहे हैं

जब तक सातवाहन गुणाध्य के पास पहुॅचता है
गुणाध्य बृहत् कथा के छह कहानियॉ पढ़ कर जला चुकता होता है
किसी तरह सातवाहन उसकी सातवीं कहानी जलने से रोक लेता है

सो बाकी सब कहानियॉ बृहत् कथा के सातवीं कहानी से निकली हैं
क्षेमेन्द्र की बृहत् कथा मंजरी **1037** एडी काश्मीर संस्कृत में पूरी है
सोमदेव का कथा सरित् सागर **1070** एडी काश्मीर संस्कृत में पूरा है

गुणाध्य की कहानी कथा सरित् सागर में —
शिव पार्वती जी को **7** कहानी सुनाते हैं
जिनको पुष्पदंत नाम का गण चुपके से सुन लेता है
पुष्पदंत उन्हें अपनी पत्नी जया को सुनाता है जया जा कर पार्वती को बताती है

पार्वती पुष्पदंत को धरती पर पैदा होने का शाप देती हैं
पुष्पदंत का मित्र माल्यवान उसे बचाने की कोशिश करता है
पर पार्वती उसको भी धरती पर जन्म लेने का शाप देती हैं
कुबेर सुप्रतीक को अलग से धरती पर जन्म लेने का शाप देते हैं

पुष्पदंत वररुचि या कात्यायन बन कर पैदा होता है और
राजा नन्द का मन्त्री बन कर वे कहानियाँ आदमियों को सुनाता है

सुप्रतीक एक कणभूति पिशाच बन कर पैदा होता है
माल्यवान प्रतिष्ठानपुरी में गुणाध्य बन कर पैदा होता है
वह प्रतिष्ठानपुरी के राजा सातवाहन की सेवा करता है
एक दिन कणभूति पिशाच पैशाची भाषा में गुणाध्य को कहानी सुनाता है

गुणाध्य सुप्रतीक पिशाच से सुनी कहानी को पैशाची भाषा में अपने खून से लिखता है
ये कहानियाँ वह राजा सातवाहन को देता है पर वह उनको स्वीकार नहीं करता
तो वह जंगल में जानवरों को उसे सुनाते हुए उन सात अध्यायों में से छह अध्याय जला देता है
पर तभी राजा सातवाहन वहाँ आ जाता है और सातवीं और आखिरी कहानी बचा लेता है

यही सातवीं और आखिरी कहानी बृहत् कथा बन जाती है
जिसमें **700** हजार श्लोक **100** हजार पन्नों पर लिखे हुए थे

गुणाध्याय ने बृहत् कथा पैशाची भाषा में क्यों लिखी? कहते हैं कि एक समय गुणाध्याय किसी से एक शर्त हार जाता है तो संस्कृत और प्राकृत भाषाऐं पढ़नी लिखनी छोड़ देता है और पैशाची भाषा सीखता है। यह न तो संस्कृत है न प्राकृत सो यह पैशाची भाषा इस शर्त को पूरा करती है।

गुणाध्याय कणभूति पिशाच से पैशाची भाषा में कहानी सुनता है और उसी भाषा में उसको लिख भी लेता है।

इन कहानियों के **700** हजार श्लोकों को वह अपने खून से इसलिये लिखता है क्योंकि उसके पास स्याही नहीं है। अपने इस

काम को राजा सातवाहन के पास भेजता है पर वह इसको मना कर देता है क्योंकि ये श्लोक पैशाची भाषा में लिखे हुए हैं।

निराश हो कर गुणाध्याय इन कहानियों को जानवरों को सुनाता है और पढ़ने के बाद हर पन्ने को जला देता है। वहाँ बैठे जानवर खाना पीना भूल जाते हैं और वहीं बैठे बैठे गुणाध्याय की कहानियाँ सुनते रहते हैं।

जंगल में जानवर न मिलने की वजह से राजा सातवाहन को महल में बहुत ही खराब माँस खाने को मिलता है।

राजा सातवाहन इसकी जाँच के लिये जंगल आता है तो उसको एक भी जानवर दिखायी नहीं देता पर उसको गुणाध्य के पढ़ने की आवाज आती है सो वह उधर ही खिंचा चला जाता है। वहाँ वह गुणाध्य को कहानी पढ़ते और उसके पन्ने जलाते देखता है तो उसका हाथ रोक लेता है।

लेकिन तब तक गुणाध्य छह कहानियाँ जला चुकता है केवल सातवीं कहानी यानी आखीर के **700** हजार श्लोक बच जाते हैं जो नरवाहनदत्ता की कहानी का आरम्भ बनते है।

फिर सातवाहन खुद गुणाध्य की कहानी लिखता है जो उसकी बृहत् कथा की सातवीं कहानी "नरवाहनदत्ता की कहानी" का परिचय बन जाती है।

इस तरह इसकी छह कहानियाँ जल जाती हैं। सातवीं कहानी नरवाहनदत्ता की कहानी बृहत् कथा बन जाती है और सातवाहन

गुणाध्याय की जो कहानी लिखता है तो वह नरवाहनदत्ता की कहानी का परिचय बन जाती है।

10 कथा सरित् सागर

11वीं शताब्दी में एक और कहानी संग्रह लिखा गया। वह था कथा सरित् सागर[59]। यह संग्रह पंडित सोमदेव भट्ट[60] ने संस्कृत में लिखा था।

इस पूर्ण पुस्तक का अंग्रेजी में केवल एक ही अनुवाद मिलता है जो 1880–1884 में छापा गया था।[61] इसमें 18 किताबें हैं, 124 अध्याय हैं और 22 हजार श्लोक हैं।

इससे पिछली कहानी "बृहत् कथा" में तुमने पढ़ा कि गुणाध्य ने सात कहानियाँ कणभूति पिशाच से सुन कर पैशाची भाषा में लिखीं।

फिर उनको जानवरों को सुनाने के बाद जब वह उनको जला रहा था कि तभी प्रतिष्ठान पुरी का राजा सातवाहन वहाँ आ गया और उसने उसकी आखिरी सातवीं कहानी, 700 हजार श्लोक की जो 100 हजार पन्नों में लिखे गये थे, जलाने से रोक ली थी पर उससे पहले की छह कहानियाँ तो वह जला ही चुका था।

---

[59] Kathaa Sarit Saagar – written in Sanskrit by a Kashmeeri Shaalv Braahman Pandit Somdev Bhatt during 11th century. This work was written to entertain Queen Suryamati, the wife of King Anantdev of Kashmeer. It consists of 18 books of 124 chapters and approximately 22,000 Shlok along with some prose. This is part of a larger collection titled "Brihatkatha" which is the largest collection of the stories in the world. It includes Panchtantra stories (in its Chapter 10), and Betaal Pachcheesee (in its Chapter 12).

[60] Pandit Somdev Bhatt wrote "Betaal Pachcheesee" also. It is a part of Kathaa Sarit Saagar

[61] By Charles Henry Towney in 2 volumes, 1300 pages. 1880 and 1884.

यह कथा सरित् सागर उसी बृहत् कथा की बची हुई किताब की सातवीं कहानी से ली गयी कहानियों का संग्रह है। इसके तीन संग्रह मिलते हैं – कथा सरित् सागर, बृहत् कथा मंजरी और बृहत् कथा श्लोक संग्रह।

पर इन तीनों में से एक भी संग्रह बृहत् कथा से सीधे नहीं लिया गया।

इस समय संस्कृत में लिखे हुए भी इसके केवल दो रूप[62] मिलते हैं – पंडित सोमदेव भट्ट का लिखा कथा सरित् सागर और क्षेमेन्द्र की लिखी बृहत् कथा मंजरी। दोनों काश्मीर संस्कृत में लिखे हुए हैं।

इसकी मूल कथा राजा उदयन और वासवदत्ता[63] के बेटे नरवाहनदत्ता की कहानी है। इस किताब की बहुत सारी कहानियाँ इसी कहानी के चारों ओर घूमती रहती हैं और इसे कहानियों का सबसे बड़ा संग्रह बनाती हैं।

कथा सरित् सागर की 10वीं किताब में पंचतन्त्र की कहानियाँ हैं और इसकी 12वीं किताब में बेताल पच्चीसी की कहानियाँ दी हुई हैं।
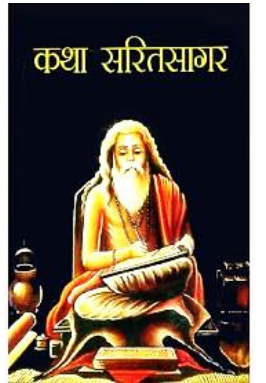
[62] Translated for the word "Versions"

[63] King Udayan was the King of Kaushaambee. Read about him in the Book "Itihas-1-People" written by Sushma Gupta in Hindi language.

11 अरेबियन नाइट्स[64]

बच्चों अब तक हमने तुम्हें भारत की कई पुस्तकों के शुरूआत की वजहें बतायीं। अब हम तुम्हें बताते हैं एक और पुस्तक की शुरूआत की मजेदार कहानी।

यह पुस्तक भारत की नहीं है पर यह पुस्तक बहुत पुरानी है और सबसे पुरानी और सबसे ज़्यादा मशहूर लोक कथाओं की पुस्तकों में से एक है। यह पुस्तक ईराक देश की 12वीं शताब्दी की कहानियों का संग्रह है।

क्या तुमने "बगदाद का चोर" और "बसरे की हूर" जैसे नाम सुने हैं? शायद न सुने हों पर हमें यकीन है कि तुम सब लोगों ने "अलादीन और उसका जादू का चिराग", "सिन्दबाद की सात समुद्री यात्राऐं", "अली बाबा चालीस चोर" की कहानियाँ तो सुनी भी होंगी और शायद पढ़ी भी होंगी।

क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि यह कहानियाँ कितनी हैं या कहाँ से आयीं या क्यों लिखी गयीं या किसने कहीं या किसको सुनायी गयीं। इन कहानियों की शुरूआत ही कैसे हुई। आओ आज हम तुम्हें बताते हैं इन कहानियों का इतिहास।

---

[64] Arabian Nights – or "The Books of a Thousand Nights and a Night". From Iraq, Asia. Many of these stories have been given in English on the Web Site : http://www.sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm

पहली बात, ये सब कहानियाँ एक पुस्तक जिसका नाम है "अरेबियन नाइट्स" से ली गयी हैं।

पर साथ में तुमको यह पढ़ कर और भी ज़्यादा आश्चर्य होगा कि खास करके यही तीन कहानियाँ उस "अरेबियन नाइट्स" किताब का हिस्सा नहीं हैं जो मूल रूप से अरबी भाषा में लिखी गयी थी बल्कि जब यूरोप के लेखकों ने इस पुस्तक का अनुवाद किया तब उन्होंने इनको इसमें जोड़ दिया था।

दूसरी बात ये सब कहानियाँ पहले से ही एक पुस्तक के रूप में नहीं मिलती थीं। ये सब कहानियाँ अलग अलग थीं। बाद में इनको इकट्ठा करके एक साथ रख कर एक पुस्तक का रूप दिया गया। आज भी ये सारी कहानियाँ एक साथ नहीं मिलतीं बल्कि इधर उधर बिखरी हुई मिलती हैं।

तीसरी बात, ये सब कहानियाँ, यानी **1001** कहानियाँ, केवल एक ही आदमी की कही गयी हैं और एक ही आदमी से कही गयी हैं। कैसी अजीब बात है। कोई ऐसा क्यों करेगा और कोई ऐसा कैसे कर सकता है।

ज़रा सोचो तो कि जिसने भी ये कहानियाँ सुनायी होंगी उसका कितना दिमाग और कितना समय लगा होगा इन सब कहानियों को सोचने में और फिर इनको सुनाने में। और जिसने भी सुनी होंगी उसके पास भी कितना धीरज होगा इनको सुनने का।

चौथी बात, ये कहानियाँ ऐसे ही नहीं कही गयी थीं जैसे माँ बाप अपने बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं बल्कि इनको कहने का एक उद्देश्य था और वह उद्देश्य क्या था यह हम अभी इसकी शुरूआत की मूल कहानी में तुम लोगों को बतायेंगे।

इन कहानियों के लिखे जाने से पहले ही ये कहानियाँ अरब देशों में कही और सुनी जाती रही थीं। इन सबको इकट्ठा करने में भी कई साल लग गये।

और इनको इकट्ठा करना भी किसी एक आदमी का काम नहीं है बल्कि बहुत सारे लोगों ने इनको इकट्ठा करके लिखा है। हालाँकि इन कहानियों की कोई मूल प्रति नहीं मिलती पर इसके कई रूप[65] 800 और 900 एडी के लिखे हुए पाये जाते हैं।

इन सब रूपों में केवल एक ही कहानी सब रूपों में एक सी है और वह है इसकी शुरूआत की मूल कहानी।

अरेबियन नाइट्स में फारस के बादशाह शहरयार की रानी शहरज़ाद हर रात उसको कहानी सुनाती थी। यह अरेबियन नाइट्स उन्हीं कहानियाँ का संग्रह है।[66]

इसका सर्वप्रथम उल्लेख पहलवी भाषा की पुस्तक "हजार अफसाने" में मिलता है। ये 1001 कहानियाँ हैं और तीन वर्षों से भी अधिक समय तक चलीं।

---

[65] Translated for the word "Version"

[66] Read some of these stories in English at the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm

तो यह है इसकी शुरूआत की मूल कहानी कि आखिर ये **1001** कहानियाँ शुरू ही कैसे हुईं —

फारस में एक राजा था जिसका नाम था शहरयार जिसका राज्य भारत और चीन तक फैला हुआ था। एक बार उसको पता चला कि उसके भाई की पत्नी अपने पति, यानी उसके भाई के प्रति, वफादार नहीं थी। यह जान कर उसको अच्छा नहीं लगा।

फिर बाद में पता चला कि उसकी अपनी पत्नी तो उसके भाई की पत्नी से भी ज़्यादा बेवफा थी सो उसने उसको मरवा दिया। जिसने भी उसके हुक्म को नहीं माना उसने उसको भी मरवा दिया।

इसके बाद उसने यह निश्चय किया कि वह हर शाम एक नयी कुँआरी लड़की से शादी करेगा और इससे पहले कि वह उसको धोखा दे वह अगली सुबह उसको मरवा देगा।

उसके इस हुक्म से उसके राज्य में बहुत ज़्यादा डर और तबाही फैल गयी और खलबली मच गयी। दिनों दिन कुँआरी लड़कियों की कमी होने लगी क्योंकि जिस लड़की की भी राजा शहरयार से शादी होती वह केवल एक रात ही ज़िन्दा रहती। अगले दिन उसे मार दिया जाता और एक दूसरी कुँआरी लड़की उसके पास ले जायी जाती।

आखिर उसका वज़ीर[67] जिसका काम उन लड़कियों को उसके पास लाना था उसको और लड़कियों को लाने में परेशानी होने लगी।

उसके अपनी भी दो बेटियॉ थीं – शहरज़ाद और दीनारज़ाद। शहरज़ाद उसकी बड़ी बेटी थी। वह बहुत सुन्दर और अक्लमन्द थी। राज्य भर में यह डर और तबाही फैली देख कर एक दिन उसने अपने पिता से कहा — "अब्बा हुजूर, आप मुझे सुलतान को दे आयें।"

वज़ीर यह सुन कर हक्का बक्का रह गया। उसने अपनी बेटी से पूछा — "बेटी तू जानती भी है कि तू क्या कह रही है?"

शहरज़ाद बोली — "जी अब्बू[68] मैं जानती हूं कि मैं क्या कह रही हूॅ।"

वज़ीर बोला — "इसका मतलब है अगले दिन तेरी मौत। नहीं बेटी मैं इसके तैयार नहीं हूॅ।"

शहरज़ाद बोली — "आप बिल्कुल फिक्र न करें अब्बू। बस आप मुझे सुलतान के पास ले चलें। मुझे अपने ऊपर पूरा यकीन है कि मैं खुद को ही नहीं बल्कि बची हुई लड़कियों को भी बचाने में कामयाब हो जाऊॅगी।"

---

[67] Vazir – Vazeer is the Urdu or Arabic word used for the Prime Minister

[68] Abboo is the word used to address father in Urdu and Arabic

पर वज़ीर इस तरह से अपनी बेटी को खोने के लिये कतई तैयार नहीं था। पर जब उसकी बेटी ने बहुत जिद की तो उसको तैयार होना ही पड़ा। सो वह वज़ीर सुलतान के पास गया और उससे कहा कि अगली शाम वह उसके पास अपनी बेटी को ले कर आयेगा।

सुलतान भी यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है वज़ीर? तुम ऐसा सोच भी कैसे सके? क्या उसको मेरी शर्त का नहीं पता?"

"मालूम है जहॉपनाह। उसको सब मालूम है।"

"फिर?"

"बस वह ऐसी ही जिद कर रही है।"

"देख लेना अगर वह बाद में मना करेगी तो तुम्हें उसकी जान खुद ही लेनी पड़ेगी वरना मैं तुम्हारी जान ले लूँगा।"

"यकीनन जहॉपनाह।"

इस बीच शहरज़ाद ने अपनी छोटी बहिन से कहा — "बहिन मुझे तेरी सहायता चाहिये। आज मेरी शादी सुलतान से हो जायेगी और कल सुबह सुलतान मुझे मरवा देंगें।

मेरे मरने से पहले तुझे मेरी सहायता करनी है। शादी के बाद मैं उनसे प्रार्थना करूँगी कि वह तुझे मेरे साथ जाने दें जो कि मैं उम्मीद करती हूँ कि वह मान लेंगे।

तेरा काम बस इतना है कि सुबह सूरज निकलने से एक घंटा पहले तू मुझे जगा दे और कहे — "बहिन अगर तुम सो न रही हो तो मुझे अपनी मजेदार कहानियों में से कोई एक कहानी सुना दो।"

मैं उठ जाऊँगी और फिर मैं कहानी कहना शुरू कर दूँगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस तरह से मैं अपने लोगों को बचाने में कामयाब हो जाऊँगी।"

उसकी बहिन तैयार हो गयी। सो अगले दिन शहरज़ाद के पिता ने बहुत दुखी होते हुए रोते रोते अपनी बेटी की शादी सुलतान से कर दी। शादी की रस्म होने के बाद शहरज़ाद ने रोना शुरू कर दिया।

जब उससे यह पूछा गया कि वह क्यों रो रही थी तो उसने बताया कि वह अपनी छोटी बहिन दीनारज़ाद के लिये रो रही थी। वे केवल दो ही बहिनें थीं और शहरज़ाद अपनी छोटी बहिन को बहुत प्यार करती थी।

सुलतान के नियमों के मुताबिक कल सुबह उसको मरवा दिया जायेगा और फिर वह उसको कभी नहीं मिल पायेगी। सुलतान की बड़ी मेहरबानी होगी अगर वह उसके साथ उसकी छोटी बहिन को भी जाने देगा। कम से कम एक रात तो वे और साथ रह लेंगे।

सुलतान ने इसमें कोई गड़बड़ नहीं समझी और वह इस बात पर राजी हो गया और दीनारज़ाद शहरज़ाद के साथ सुलतान के महल चली गयी।

अपने प्लान के मुताबिक सुबह सूरज निकलने से पहले दीनारज़ाद शहरज़ाद के पास गयी और बोली — "सुबह को तो तुम मर जाओगी बहिन। आज की अपनी ज़िन्दगी की आखिरी रात को तुम मुझे अपनी कोई सबसे अच्छी और मजेदार कहानी सुना दो ताकि यह रात खुशी खुशी कटे।"

शहरज़ाद ने अपनी बहिन को तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह सुलतान से बोली — "क्या आप मुझे मेरी छोटी बहिन को एक कहानी सुनाने की इजाज़त देंगे?"

सुलतान बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जरूर जरूर।"

और उसने अपनी बहिन को कहानी सुनानी शुरू की तो एक कहानी में से दूसरी कहानी निकली पर सुलतान को तो सुबह अपने दरबार में जाना था। और सुबह तक उसकी कहानी पूरी नहीं हुई थी सो वह यह कह कर चला गया कि वह रात को उस कहानी का बचा हुआ हिस्सा सुनने के लिये वहॉ जरूर आयेगा।

यह क्रम **1001** रात तक चलता रहा। कैसे?

शहरज़ाद एक बहुत ही होशियार लड़की थी। वह ये कहानियॉ कुछ ऐसे सुनाती थी कि या तो वह उस कहानी को उस रात अधूरा छोड़ देती थी ताकि सुलतान की उत्सुकता बनी रहे और वह फिर अगली रात भी उस कहानी को सुनने आये।

नहीं तो उस कहानी में से एक कहानी और निकालती थी जो सुलतान की उत्सुकता को जगाये रखती थी और वह फिर उस कहानी को सुनने के लिये अगली रात आता था।

इस तरह से समय गुजरता गया और वह वजीर की बेटी शहरज़ाद को अगले दिन सुबह जैसा कि उसका हुक्म था मरवा ही नहीं सका। इसी उत्सुकता की वजह से वह तीन साल तक बची रही। है न कुछ अजीब सी बात।

अब तीन साल तो किसी का दिल जीतने के लिये बहुत होते हैं। इसके अलावा इतने समय में शहरज़ाद के तीन बेटे भी हो गये – एक चलता हुआ, एक घुटनों चलता हुआ और एक गोद में।

इसके बाद सुलतान का वह हुक्म रद्द कर दिया गया और वे दोनों मिल जुल कर बहुत समय तक रहे।

930वीं रात को शहरज़ाद ने कहा — "आज मेरे दिमाग में औरत की धोखाधड़ी की एक कहानी है पर मुझे डर है कि इस कहानी को सुनाने के बाद सुलतान की नजर में मेरी इज़्ज़त कम रह जायेगी। पर मुझे यह भी पूरी उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा क्योंकि यह कहानी और कहानियों से बिलकुल ही अलग है।

औरतें शरारतें तो करती ही हैं पर उनको अपनी उन शरारतों को न किसी को बताना चाहिये और न ही कहना चाहिये।"

इस पर दीनारज़ाद बोली — "बहिन बताओ तो तुम्हारे दिमाग में क्या है। तुम सुलतान से बिल्कुल मत डरो क्योंकि औरतें तो जवाहरात की तरह होती हैं।

अगर वे जौहरी[69] के हाथ पड़ जाती हैं तो वह उनको अपने लिये रख लेता है और बाकी सबको अलग कर देता है। बल्कि वह उनमें से कुछ को ज़्यादा पसन्द भी करता है।

इसी तरह से वह एक कुम्हार की तरह भी होती है जो पकने के लिये भाड़ में अपने सारे बरतन रख देता है और जब उनको निकालता है तो उसे कुछ तो तोड़ने पड़ते हैं, कुछ को दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं और कुछ जैसे थे वैसे ही वापस निकल आते हैं।"

तब शहरज़ाद बोली — "तब ओ सुलतान सुनो यह कहानी..."

तो बच्चों यह है अरेबियन नाइट्स की **1001** कहानियों की शुरूआत की कहानी। है न मजेदार कहानी।

देखो कितनी अक्लमन्दी से शहरज़ाद ने खुद को और बहुत सारी नौजवान लड़कियों को सुलतान के हाथों मरने से बचाया। और केवल मरने से ही नहीं बचाया बल्कि सुलतान की सुलताना बन कर तीन बेटों की माँ भी बन गयी।

[69] Translated for the word "Jeweler"

12 पैन्टामिरोन[70]

भारत से दूसरे देश की एक और पुस्तक। यह पुस्तक बहुत पुरानी है और सबसे पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों में से एक है। यह पहली बार इटली के नैपिल्स शहर में प्रकाशित की गयी थी और इसे इटली के एक मशहूर कवि जियामबतिस्ता बासिल ने **1634** और **1636** में प्रकाशित किया था।

इस पुस्तक ने लोक कथा लिखने वाले बाद के कई लेखकों को प्रभावित किया और उन्होंने इस पुस्तक की कहानियों को आधार बना कर उन पर कहानियाँ लिखीं। इसका नाम है "पैन्टामिरोन"।[71]

यह एक परियों की कहानियों की कहानी की पुस्तक है। इसमें "सोती हुई सुन्दरी" और "सिन्डरैला"[72] जैसी कहानियाँ भी हैं। इसमें भी अरेबियन नाइट्स की कहानियों वाली शैली इस्तेमाल की गयी है जिसमें एक मुख्य कहानी है और उसमें से फिर और कहानियाँ निकलती हैं।

इस पुस्तक में राजकुमारी ज़ोज़ा एक नीच रानी का मन बहलाने के लिये उसको पाँच दिन तक कहानियाँ सुनाती है। क्यों? क्योंकि

---

[70] How the Tales Came to be Told. Taken from "Stories From Pentamerone" by Giambattista Basile. Naples. 2 vols. 1634 qnd 1636.
Book available at : http://www.gutenberg.org/files/2198/2198-h/2198-h.htm and https://fairytalez.com/author/stories-from-pentamerone/

[71] Pentamerone – its meaning is 50 stories. In Italian its title means – The Tale of Tales or Entertainment for Little Ones. Its Hindi translation is available free from Sushma Gupta as an e-book.

[72] "Sleeping Beauty" and "Cinderella"

उसने ज़ोज़ा के पति को चुरा लिया है और वह उससे उसे वापस लेना चाहती है। इसकी पहली कहानी इसकी आगे की कहानियों का परिचय है "ये कहानियाँ कैसे कही गयीं"।

पैन्टामेरोन में पैन्टा शब्द यूनानी भाषा का है जिसका मतलब होता है पाँच। इस संग्रह में 10 कहानियाँ कहने वालियों ने पाँच दिनों में 50 कहानियाँ सुनायी हैं यानी 10 कहानियाँ रोज। तो लो पढ़ो अब सबसे पुरानी परियों की कहानियों के इस संग्रह की शुरूआत की कहानी जिसने आगे की कहानियों को जन्म दिया।

यह एक पुरानी कहावत है कि कोई आदमी वही खोजता है जो उसे नहीं खोजना चाहिये और वही पाता है जो उसको नहीं पाना चाहिये। हर एक ने उस बन्दर की कहानी सुनी होगी जो अपने जूते पहनते हुए अपने ही पैरों से पकड़ा गया था।

और यही इसी ढंग से एक नीच दासी के साथ हुआ जिसने कभी जूते तो नहीं पहने पर वह अपने सिर पर एक ताज पहनना चाहती थी। पर सीधी सड़क हमेशा ही अच्छी होती है और एक समय आता है, जल्दी से या देर से, जब सारी समस्याऐं सुलझ जाती हैं सारा हिसाब बराबर हो जाता है।

आखीर में नीचता का इस्तेमाल करके जो किसी दूसरे के हिस्से का था उसको उसने नीचे गिरा तो लिया पर जितनी तेज़ी से वह ऊँचा चढ़ी थी उतनी ही ज़ोर से वह नीचे भी गिर गयी। यह तुम अभी देखोगे।

एक समय की बात है कि वुडी घाटी[73] के राजा के एक बेटी थी जिसका नाम था ज़ोज़ा जो कभी हँसती हुई नहीं देखी गयी। उसके दुखी पिता ने जिसकी ज़िन्दगी की खुशी केवल उसकी बेटी थी कोई उपाय ऐसा नहीं छोड़ा जिससे उसका दुख दूर हो सके।

उसने बहुत सारे ऐसे लोगों को बुला भेजा जो लम्बे लम्बे डंडों पर चल सकते थे या फिर जो गोले के अन्दर से कूद सकते थे या फिर जो बौक्सिंग कर सकते थे या फिर उन लोगों को बुला भेजा था जो आत्माओं से बात कर सकते थे जादू दिखा सकते थे।

उसने ऐसे गेंद उछाल कर करतब दिखाने वालों को भी बुला रखा था जो कई तरह से अपने हाथों को नचा सकते थे।

उसने किस किस को नहीं बुलाया – ताकतवर आदमी, नाचते हुए कुत्ते, उछलते कूदते हँसोड़िये, ऐसे गधे जो गिलास से पानी पीते थे। थोड़े में कहो तो उसने जो कुछ भी उससे उसको हँसाने के लिये हो सकता था वह सब उसने आजमा कर देख लिया था। पर सारा समय बेकार गया क्योंकि कोई भी उसके होठों पर हँसी नहीं ला सका।

सो आखीर में जब बेचारे पिता ने अपनी सारी कोशिशें कर लीं तो उसने एक और कोशिश करने का विचार किया। उसने अपने महल के दरवाजे के सामने तेल का एक बहुत बड़ा फव्वारा लगाने का हुकुम दिया।

[73] Woody Valley – a name of a place

उसने सोचा कि जब तेल सड़क पर बहेगा तब लोग उसके किनारे किनारे चींटियों के झुंड की तरह से चलेंगे, असल में उनको उस तरह से चलना ही पड़ेगा ताकि उनके कपड़े गन्दे न हों या उनको टिड्डों की तरह से उछल उछल कर चलना पड़ेगा।

या फिर बकरों की तरह से कूदना पड़ेगा, बड़े खरगोशों[74] की तरह से भागना पड़ेगा। कुछ लोगों को सँभाल सँभाल कर कदम रखने होंगे जबकि दूसरे लोग दीवार के सहारे सहारे बच बच कर चलेंगे।

इस तरह से कुछ ऐसा भी हो सकता है कि मेरी बेटी हँस जाये। सो इस प्लान के अनुसार तेल का एक बहुत बड़ा फव्वारा बनवाया गया।

एक दिन ज़ोज़ा अपनी खिड़की के सहारे खड़ी थी गम्भीर, दुखी, सिरके जैसी खट्टी कि इत्तफाक से वहाँ एक बुढ़िया आयी। उसने एक स्पंज का टुकड़ा तेल में डुबोया और उसको एक छोटे से घड़े में निचोड़ कर अपना लोटा भरने लगी जो वह अपने साथ लायी थी।

उसको तेल से अपना लोटा भरने में बहुत मेहनत करनी पड़ रही थी। पास में खड़े दरबार के एक नौकर ने उसकी तरफ एक

[74] Translated for the word “Hare”. See its picture above. It is a kind of rabbit, but wild and bigger in size.

पत्थर इतना निशाना लगा कर फेंका कि उसका वह छोटा सा घड़ा टूट गया।

इस पर वह बुढ़िया जिसकी जबान पर बाल नहीं थे[75] उस नौकर की तरफ घूमी और गुस्से में भर कर बहुत ज़ोर से बोली — "ओ नीच छोटे कुत्ते, खच्चर, फाँसी की रस्सी, तकली[76] जैसी टाँग

वाले। तेरी किस्मत खराब हो। भगवान करे तुझे भाला छेद जाये। तेरे ऊपर हजारों मुसीबतें आ पड़ें। और भी जो कुछ तेरे लिये बुरा होना है वह सब तेरे साथ हो ओ चोर।"

इस लड़के ने जिसके अभी न तो कोई दाढ़ी थी और न कुछ सोचने की अक्ल थी वह तो अभी बच्चा ही था गालियों की यह बौछार सुन कर उसको भी उसी तरह की गालियाँ दीं — "ओ जादूगरनियों की नानी। ओ बुढ़िया। ओ बच्चों को खाने वाली। तुझे जो कुछ कहना था कह चुकी?"

बुढ़िया ने जब अपनी इतनी सारी बड़ाई सुनी तो वह तो फिर से गुस्से में भर गयी। उसके हाथों से धीरज की लगाम छूट गयी वह तो पागलों जैसी दिखायी देने लगी और बन्दर की तरह से दाँत दिखाने लगी।

---

[75] It means that she had no control on her speech. She could speak anything to anybody.

[76] Translated for the word "Spindle". See its picture above.

यह दृश्य देख कर तो ज़ोज़ा की हॅसी छूट पड़ी कि वह तो खुद ही हॅसते हॅसते बेहोश सी होने लगी। पर जब बुढ़िया ने देखा कि उसकी चाल तो काम कर गयी तो वह और उत्साह में भर गयी।

उसने ज़ोज़ा की तरफ एक डरावनी नजर से देखा और बोली — "तुम्हें कभी पति न मिले जब तक तुम गोल मैदान वाले राजकुमार[77] को न पा लो।"

यह सुन कर ज़ोज़ा ने उस बुढ़िया को अपने पास बुलाया और उससे यह पूछा कि ये शब्द कह कर उसको उसने शाप दिया है या बेइज़्ज़ती की है।

बुढ़िया बोली — "तुम्हें पता होना चाहिये कि यह राजकुमार दुनियॉ का सबसे सुन्दर राजकुमार है और इसका नाम टैडियो[78] है। इसको एक परी के शाप ने इसको आखिरी बार छू कर एक शहर की दीवार के बाहर एक कब्र में रख दिया है।

उसके कब्र के पत्थर पर लिखा है कि जो कोई भी स्त्री तीन दिन के अन्दर उसके ऊपर के हुक पर टॅगे हुए घड़े को अपने ऑसुओं से भर देगी वही उसको ज़िन्दा कर सकेगी और वही उससे शादी करेगी।

---

[77] Translated for the words "Prince of Round-Field"

[78] Taddeo – name of the Prince of Round-Field

लेकिन किसी भी आदमी की दो आँखों में इतनी ताकत नहीं है कि वे तीन दिन रो कर उस घड़े को अपने आँसुओं से भर सकें। उस घड़े में आधा बैरल[79] पानी आता है।

तुम मेरी बातों पर हँसीं इसी लिये मैंने तुम्हारे लिये यह इच्छा की है। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगी कि तुम इस काम को कर सको। यह मैंने तुमसे उसका बदला लेने के लिये कहा है जो तुमने मेरे साथ गलत किया है।"

ऐसा कह कर वह सीढ़ियों से तुरन्त ही नीचे चली गयी ताकि कहीं कोई उसकी पिटायी न करे।

ज़ोज़ा उस बुढ़िया के कहे शब्दों पर सोचती रही सोचती रही। उसके दिमाग में सैकड़ों तरह के विचार घूमने लगे और इतने घूमे कि जैसे उनकी उसमें चक्की चल रही हो।

फिर उसके दिमाग में उत्साह का एक ऐसा तीर लगा जिसने उसकी सोचने की ताकत बिल्कुल खत्म कर दी और उस पर जादू डाल दिया हो। उसने अपने पिता की तिजोरी से थोड़े से पैसे लिये और महल छोड़ कर चल दी।

[79] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

वह चलती गयी चलती गयी जब तक वह एक परी के किले तक पहुँची। वहाँ जा कर उसने अपने दिल का सारा बोझ उस परी पर हलका कर दिया। उसको अपना सब हाल बता दिया।

परी को इतनी सुन्दर नौजवान लड़की पर दया आ गयी जिसको किसी अनजान चीज़ के लिये इतना प्यार था और उसको पाने की सहायता कोई नहीं थी। उसने उसको अपनी बहिन के नाम एक चिट्ठी दी और उसको उसके पास भेजा कि वह उसकी इस काम में सहायता करेगी। उसकी वह बहिन भी एक परी थी।

यह बहिन भी बहुत ही दयालु थी और उसने भी इसका बहुत प्यार से स्वागत किया। अगली सुबह जब रात ने चिड़ियों से कहा "जिसने भी चिड़ियों के झुंड के काले साये को इधर उधर जाते देखा तो उसको इनाम दिया जायेगा।"

उस परी बहिन ने उसको एक अखरोट[80] दिया और कहा — "यह ले मेरी बच्ची। तू यह अखरोट ले जा और देख इसे सँभाल कर रखना कभी इसे तोड़ना नहीं जब तक कि तुझे इसकी बहुत जरूरत न पड़ जाये।"

उसके बाद उसने अपनी एक और बहिन के नाम एक चिट्ठी दी कि वह उस चिट्ठी को ले जा कर उसकी दूसरी बहिन को दे दे। उसने वह चिट्ठी उससे ली और आगे चल दी।

---

[80] Translated for the word "Walnut". See its picture above.

काफी दूर चलने के बाद ज़ोज़ा उन परियों की एक और बहिन के पास आयी तो उसने भी उसका बड़े प्यार से स्वागत किया।

अगले दिन उसने भी अपने एक और बहिन के पास भेजा। चलते समय उसने उसको एक चेस्टनट[81] दिया और उससे कहा कि वह उसको तब तक न तोड़े जब तक कि उसको बहुत जरूरत न हो।

वह उस चेस्टनट को ले कर तीसरी बहिन के पास चली। वहाँ भी उस परी की तीसरी बहिन ने ज़ोज़ा का बहुत प्यार से स्वागत किया। अगली सुबह उसने उसको एक हैज़लनट[82] दिया और कहा कि वह उसको तभी तोड़े जब वह बहुत ज़्यादा मुसीबत में हो।

साप ज़ोज़ा तीनों नट ले कर आगे रास्ते पर बढ़ी। उसने बहुत

सारे जंगल और नदियाँ पार कीं। ठीक सात साल बीत जाने के बाद जब सूरज मुर्गों के आने से जागा और अपने रास्ते पर चलने के लिये अपने घोड़े पर जीन[83] कस रहा था तभी वह गिरती पड़ती लँगड़ाती सी गोल मैदान में पहुँची।

वहाँ उसको शहर के बाहर एक फव्वारे के पास ही संगमरमर की एक कब्र दिखायी दी जो क्रिस्टल के आँसू रो रही थी। उसने

---

[81] Chestnut is a kind of nut, people eat it after roasting it. See its picture above.

[82] Hazelnut is also kinf od nut like almond and walnut. See its picture above.

[83] Translated for the word “Saddle”. See its picture above.

उसके ऊपर लटका हुआ एक घड़ा उठाया और उसमें उसने रोना शुरू कर दिया। वह बिना सिर उठाये ही उसमें रोती रही रोती रही रोती रही।

दो दिन बाद उसने देखा कि वह बस अब केवल दो इंच ही खाली रह गया था। पर वह रोते रोते अब तक थक गयी थी सो उसकी ऑख लग गयी और वह एक घंटे तक सोती रही।

इस बीच एक दासी जिसकी टिड्डे जैसी टॉगें थीं वहॉ आयी। उसको उस फव्वारे से पानी भरना था।

वह उस फव्वारे का मतलब जानती थी क्योंकि उस फव्वारे के बारे में तो सभी जानते थे। जब उसने ज़ोज़ा को वहॉ इतनी ज़ोर ज़ोर से रोते देखा कि उसकी ऑखों से पानी की दो धाराऐं बहती देखीं तो वह उसको देखती रही और उस पर नजर रखती रही कि वह घड़ा पूरा न भर जाये ताकि वह उस लड़की को धोखा दे सके।

सो अब जबकि ज़ोज़ा सो रही थी तो उसने मौका पा कर उसके नीचे से घड़ा हटा लिया और उसके ऊपर अपनी ऑखें रख दीं। वह घड़ा चार सेकंड में भर गया।

और जैसे ही वह घड़ा भरा वैसे ही राजकुमार अपनी संगमरमर की कब्र से ज़िन्दा हो कर उठ खड़ा हो गया और उस काली लड़की को अपने गले से लगा लिया। वह उसे सीधा अपने महल ले गया।

महल में बहुत रोशनी की गयी और दावतों का इन्तजाम हुआ। उसने उससे शादी कर ली।

जब ज़ोज़ा की ऑख खुली तो उसने देखा कि उसके ऑसुओं का घड़ा तो वहॉ से गायब है। घड़े के साथ साथ में उसकी आशाऐं भी चली गयी थीं। इसके लिये वह अपनी ऑखों को ही दोष देने लगी।

इस पर वह इतना दुखी हुई कि वह उस मौत के घर से जाने का सोचने लगी। आखिर में उसको लगने लगा कि अब उसको कोई सहायता नहीं मिलेगी सो वह उठी और वहॉ से शहर की तरफ धीरे धीरे चलने लगी।

शहर जा कर जब उसने सुना कि महल में तो दावतें हो रही हैं और राजकुमार किस लड़की से शादी कर रहा है तो उसको अपने साथ किया गया धोखा समझ में आ गया।

उसके मुँह से निकला "इन दो काली चीज़ों ने मुझे बरबाद कर दिया – एक तो काली नींद और दूसरी यह काली दासी।"

फिर उसने राजकुमार के महल के सामने एक घर लिया जहॉ से वह अपने दिल के भगवान को तो नहीं देख सकती थी पर वह कम से कम उन दीवारों को देख सकती थी जिनके अन्दर वह जिसके लिये तड़प रही थी वह बन्द था।

पर टैडियो ने जो हमेशा उस काली लड़की के चारों तरफ चिमगादड़ की तरह उड़ता रहता था एक बार ज़ोज़ा को देख लिया तो वह उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया।

जब दासी को इस बात का पता चला तो वह तो गुस्से भर गयी और कसम खायी कि अगर टैडियो ने खिड़की नहीं छोड़ी तो वह उसके बच्चे को मार देगी जब वह पैदा होगा।

टैडियो जिसको एक वारिस चाहिये था और उसके आने की वह बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कर रहा था उसको नाराज नहीं करना चाहता था सो वह ज़ोज़ा की नजरों से दूर हट गया।

अपने इस दर्द की दवा को दूर जाता देख कर ज़ोज़ा की आशाओं पर पानी फिर गया। अब उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे।

और कोई चारा न देख कर उसने परियों की दी हुई भेंटों का इस्तेमाल करने का सोचा। उसने पहली परी का दिया हुआ अखरोट तोड़ दिया। उसमें से एक बौने जैसा गुड्डा निकल पड़ा। वह दुनियाँ भर में सबसे सुन्दर खिलौना था।

जब वह अपनी खिड़की पर बैठी तो उस गुड्डे ने गाना शुरू कर दिया। उसने ऐसी आवाज में गाया कि ऐसा लगता था जैसे कोई चिड़ियों का राजा गा रहा हो।

दासी ने जब यह देखा और सुना तो उसको इतना मोह लिया कि उसने टैडियो को बुलाया और उससे कहा — "मुझे वह छोटा

आदमी ला दो जो उधर सामने गा रहा है नहीं तो मैं जैसे ही तुम्हारा बच्चा जन्मेगा मैं उसे मार दूँगी।"

बेचारे राजकुमार को उसको कहा मानना पड़ा उसने तुरन्त ही ज़ोज़ा से पुछवाया कि क्या वह अपना वह बौना उसको बेचेगी। ज़ोज़ा ने कहा कि वह कोई सामान बेचने वाली नहीं थी पर हॉ वह उसको उसे भेंट में दे सकती थी।

टैडियो ने उसकी बात मान ली क्योंकि वह अपनी पत्नी को खुश रखना चाहता था।

चार दिन बाद ज़ोज़ा ने चेस्टनट तोड़ दिया तो उसमें से एक बहुत सुन्दर मुर्गी अपने **12** चूज़ों के साथ निकल पड़ी। सब सोने के बने थे। उसने उनको खिड़की पर रख दिया। जब दासी ने देखा तो वे उसको बहुत अच्छे लगे। उसने उनको टैडियो को भी दिखाया। उसने टैडियो से उनको लाने के लिये कहा। कहा कि वह उसको वे मुर्गी और उसके चूज़े ला दे।

टैडियो फिर उसके जाल में फॅस गया। उसने उसको खुश करने के फिर से ज़ोज़ा से उनको बेचने के लिये कहा पर ज़ोज़ा ने फिर वही जवाब दिया कि वह कोई सामान बेचने वाली नहीं थी बल्कि अगर वह चाहे तो वह उनको उसे भेंट में दे सकती थी।

अब टैडियो और तो कुछ कर नहीं सकता था सो उसने उनको भेंट की तरह स्वीकार कर लिया।

फिर चार दिन बीत गये। अबकी बार ज़ोज़ा ने हैज़लनट तोड़ दिया तो उसमें से तो एक गुड़िया निकल पड़ी। वह सोना कातती थी। यह तो एक बहुत ही अद्भुत दृश्य था। उसने उसको भी खिड़की पर रख दिया।

जैसे ही उसने उसे खिड़की पर रखा तो दासी की नजर उस पर गयी। तुरन्त ही उसने टैडियो को बुलाया और उससे कहा कि उसे वह गुड़िया चाहिये। अगर उसने उसे ला कर उसे नहीं दिया तो वह उसके बच्चे को जन्मते ही मार देगी।

टैडियो जो अब तक अपनी घमंडी पत्नी के हाथों शटल की तरह से इधर उधर कूद रहा था हिम्मत नहीं कर पा रहा था कि वह उस गुड़िया के लिये ज़ोज़ा को बुलवा भेजे।

पर फिर अपने बच्चे का ख्याल करके उसने यह तय किया कि उसका वहाँ खुद का जाना ही अच्छा रहेगा। और फिर ये कहावतें याद करके कि "अपने आपसे अच्छा कोई और दूत नहीं है।" और "जिस आदमी को अगर मछली खानी है तो उसको उसे उसकी पूँछ से पकड़ना चाहिये।" वह खुद ज़ोज़ा के पास गया और अपनी पत्नी की बेचैनी के लिये उससे माफी माँगी।

ज़ोज़ा ने जब अपने दुख की वजह को देखा तो उसने अपने आपको रोक लिया और बहुत देर तक उसका माफी माँगना सुनती रही ताकि उसका प्यार उसकी आँखों के सामने ज़्यादा देर तक रहे जिसको उस काली दासी ने चुरा लिया था।

आखिर उसने वह गुड़िया उसको दे दी जैसा कि उसने अपनी दूसरी चीज़ों के साथ किया था। पर उसको देने से पहले उसने अपने मन में एक इच्छा की कि जैसे ही वह दासी अपने हाथ में इस गुड़िया को ले तो उसके मन में उससे कहानी सुनने की इच्छा जाग जाये।

जब टैडियो ने गुड़िया हाथ में ली तो उन सबका बिना एक पैसा दिये हुए ही उसके दिल में एक ऐसी भावना पैदा हो गयी कि उसने अपना राज्य और ज़िन्दगी दोनों उसको दे दीं।

गुड़िया ले कर वह घर लौट आया और आ कर वह गुड़िया अपनी पत्नी के हाथों में रख दी। तुरन्त ही उसके मन में भी यह इच्छा हुई कि वह उससे कहानियाँ सुने।

उसने फिर अपने पति को बुलाया और कहा कि मुझे कुछ ऐसे कहानी कहने वाले बुलाओ जो मुझे कहानी सुनायें। नहीं तो मैं अपनी बात की पक्की हूँ मैं तुम्हारे बच्चे को मार दूँगी।

उसके इस पागलपन को दूर करने के लिये टैडियो ने तुरन्त ही एक फरमान जारी कर दिया कि बताये गये दिन पर राज्य की सारी स्त्रियाँ महल में इकट्ठी हों।

और उस दिन जब शुक्र तारा सुबह को जगाने के लिये निकलता हो और उस रास्ते पर रोशनी बिखेरने के लिये कहता हो जिस पर सूरज को जाना होता है राज्य की बहुत सारी स्त्रियाँ महल में इकट्ठी हुईं।

पर टैडियो को लगा कि वह इतनी सारी स्त्रियों को केवल अपनी पत्नी के आनन्द के लिये महल में इकट्ठी नहीं कर सकता सो उसने सोचा कि दस सबसे अच्छी कहानी कहने वालियों और तरीके वाली स्त्रियों को चुना।

ये थीं झाड़ी जैसे बालों वाली ज़ीज़ा, मुड़ी हुई टाँगों वाली सीका, फूली हुई गरदन वाली मेनेका, लम्बी नाक वाली टौला, कुबड़ी पोपा, दाढ़ी वाली एन्टोनैला, ठिगनी चूला, धुँधला देखने वाली पाओला, गंजी शिवोनमिटैला और चौकोर कन्धों वाली जकोवा।[84]

सबके नाम एक कागज पर लिख लिये गये। दूसरों को वापस भेज दिया गया। वह दासी के साथ अपने सिंहासन की छतरी के नीचे से उठा और दोनों अपने महल के बागीचे में चले गये जहाँ पत्तों वाली शाखाऐं आपस में इतनी गुँथी हुई थीं कि उनमें से हो कर सूरज की रोशनी भी नहीं आ रही थी।

वे वहाँ आ कर घनी बेलों से बने हुए एक कमरे में बैठ गये। उसके बीच में एक फव्वारा चल रहा था।

वहाँ टैडियो अपनी हल्की आवाज में बोला — "दुनियाँ में दूसरों के कामों के बारे में जानने से अच्छी बात तो कोई है ही नहीं ओ

[84] Bushy-haired Zeza, Bandy-legged Cecca, Wen-necked Meneca, Long-nosed Tolla, Hump-backed Popa, Bearded Antonella, Dumpy Ciulla, Blear-eyed Paola, Bald-headed Civonmetella, and Square-shouldered Jacova.

मेरी प्यारी पत्नी। और बड़े बड़े विचारकों ने कहानियाँ सुनने को सबसे ज़्यादा खुशी पाने वाला साधन माना है।

जब कोई आदमी कोई अच्छी अच्छी बातें सुनता है तो उसके दुख दूर हो जाते हैं। परेशान करने वाले विचार उड़न छू हो जाते हैं और आदमी की उम्र बढ़ जाती है।

इसी वजह से तुम देखती हो कि कलाकार अपना काम छोड़ देते हैं, सौदागर लोग अपने घर छोड़ देते हैं, वकील अपने मुकदमे छोड़ देते हैं। दूकान वाले अपनी दूकान बढ़ा देते हैं, लोग नाइयों की दूकान से उनकी कहानियाँ सुनने के लिये बात करने वालों के पास चले जाते है।

इसलिये मैं अपनी पत्नी की इस जिद को केवल माफ करता हूँ कि उसको वह गुड़िया इतनी अच्छी लगी कि उसने उस गुड़िया को जिद करके मुझसे मँगवाया जिसने उसके मन में कहानी सुनने की इच्छा जगायी।

इसलिये मेहरबानी करके आप लोग यहाँ आयें मेरी इच्छा और राजकुमारी की जिद को पूरा करें। अगले **4–5** दिनों तक आप में से हर एक यहाँ एक ऐसी कहानी रोज सुनायेगा जो बुढ़ियें अपने बहुत छोटे छोटे बच्चों को सुनाना पसन्द करती हैं।

आप लोग नियमित रूप से यहाँ आयेंगी और अच्छा खाना खाने के बाद एक कहानी सुनायेंगी ताकि समय खुशी से गुजरे।”

यह सुन कर उन सबने हॉ में सिर हिलाया। इस बीच मेज पर खाना लगाया गया और फिर हर एक स्त्री बारी बारी से अपनी कहानी सुनाने लगी।

और इस तरह यह संग्रह उन्हीं कहानियों का संग्रह है जो उन दसों स्त्रियों ने उस काली दासी को सुनायीं।

इतिहास सीरीज़ की पुस्तकें

काले रंग में लिखे हुए टाइटिल्स ई–बुक के रूप में बिना पैसे के उपलब्ध हैं
लाल रंग में लिखे हुए टाइटिल्स बाजार में उपलब्ध हैं

इतिहास–**1** ः हमारे महान लोग
इतिहास–**2** ः हमारे महान वैज्ञानिक
इतिहास–**3** ः पुस्तकों के जन्म की कहानियाँ
इतिहास–**4** ः कहावतों के जन्म की कहानियाँ
इतिहास–**5** ः एक घटना ने जीवन बदला
अकबर बीरबल की कहानियाँ
लोबो का इथियोपिया – **1625** में
शीबा की रानी मकेडा — प्रभात प्रकाशन
राजा सोलोमनः सोलोमन और सैटर्न — प्रभात प्रकाशन

Updated on June 2021

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमनः सोलोमन और सैटर्न — प्रभात प्रकाशन
6 रैवन की लोक कथाऐं — प्रभात प्रकाशन
7 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2020

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2000** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून **2021**